



# अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

अर्हत उवाच

दुखवंति दुखवी  
इह दुखकडेणं।

अपने दुष्कृत से दुःखी  
बना हुआ प्राणी दुःख का  
ही अनुभव करता है।

• नई दिल्ली • वर्ष 24 • अंक 27 • 10 - 16 अप्रैल, 2023



प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 08-04-2023 • पेज : 16 • ₹ 10

२६२२वें महावीर जन्म कल्याणक दिवस का आयोजन

## महावीर के साधना पथ का अनुसरण करें : आचार्यश्री महाश्रमण

बोरियावी (खेड़ा-गुजरात),  
३ अप्रैल, २०२३

चैत्र शुक्ला त्रयोदशी, वर्तमान अवसर्पिणी काल के अंतिम चौबीसवें तीर्थंकर परम प्रभु शासन देव भगवान महावीर का जन्म कल्याणक दिवस। आज ही के दिन राजा सिद्धार्थ के घर माँ त्रिशला की पावन कुक्षी से वर्धमान का अवतरण हुआ था। आज पूरा देश भगवान महावीर का २६२२वाँ जन्म कल्याणक दिवस मना रहा है।

भगवान महावीर के प्रतिनिधि आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि चैत्र मास का शुक्ल पक्ष और त्रयोदशी तिथि भगवान महावीर की जन्म जयंती का दिन। हमारी दुनिया में आदमी पैदा होते हैं, जीवन जीते हैं और एक दिन चले जाते हैं।

जन्म और मृत्यु के बीच का जीवन काल बड़ा महत्वपूर्ण है कि इस जीवन काल में जीवन कैसे जीया? जीवन अच्छा जीया है, बहुत अच्छा कृतत्व किया है, तो मानना चाहिए कि जीवन सुफल हो गया। भगवान महावीर भी एक बच्चे के रूप में जन्मे थे। करीब ७२ वर्ष का उनका जीवन काल था। पर जो जीवन काल उनका साधना काल व केवल ज्ञान का वह विशेष था। वे तो सार्वज्ञानिक थे।

भगवान महावीर ने साधना और अध्यात्म का जीवन जीया और वे अध्यात्म के प्रवक्ता थे। आगम के आधार पर देखें कि भगवान गौतम ने अनेक जिज्ञासाएँ की थीं। उनके प्रश्नों के उत्तरों के आधार पर हमें कितना ज्ञान प्राप्त हो रहा है। ईसापूर्व ५६६ वर्ष और विक्रम पूर्व ५४२ वर्ष के समय उनका प्राकट्य हुआ था। वे निरंतरायता को उपलब्ध हुए। आगम के आधार पर हम भगवान महावीर को जान



सकते हैं।

भगवान महावीर या जैन दर्शन के अनेक सिद्धांत हैं उनमें कर्मवाद एक व्यापक सिद्धांत है। उसके ज्ञान से वैराग्य वृत्ति का भी विकास हो सकता है। अनेकांतवाद व आत्मवाद का भी सिद्धांत है। पुनर्जन्मवाद भी आत्मवाद का एक सिद्धांत है। मूल पाठ तो आगमों का सामने आ चुका है। अनुवाद-टीपण रूप में भी कई आगम आ चुके हैं या आने की तैयारी में हैं। सारे आगम इस रूप में सामने आ जाएँ तो जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ का एक कार्य पूर्ण हो सकेगा। अनेक चारित्र्यात्मक व व्यक्ति इस कार्य में लगे हुए हैं। यह कार्य समय और श्रम माँगता है।

भगवान महावीर जयंती के दिन ही गुरुदेव तुलसी ने आगम संपादन के कार्य करने की घोषणा करवाई थी। सारा कार्य

निष्ठापूर्वक सामने आ जाए तो एक अच्छी निष्पत्ति आ सकती है। भगवान महावीर के ध्यान के आधार पर ही प्रेक्षाध्यान का नामकरण लगभग आधी शताब्दी पहले जयपुर में घोषित हुआ था। गुरुदेव तुलसी ने अणुव्रत को भी एक व्यापक रूप प्रदान कर दिया। कोई भी आदमी अणुव्रत को स्वीकार कर सकता है। अणुव्रत यात्रा भी चल रही है। जीवन विज्ञान का उपक्रम भी चल रहा है।

महावीर जयंती के दिन अनेक संप्रदायों के लोग इस प्रसंग से एक साथ जुड़ जाते हैं। भगवान महावीर की साधना का सार है—अहिंसा, संयम और तप। हम भी साधना की दृष्टि से जितना संभव हो सके, आगे बढ़ने का प्रयास करें। चतुर्विध धर्मसंघ में ये संस्कार बढ़ते रहें। समण श्रेणी द्वारा विदेशों में भी संस्कारों एवं तत्त्व ज्ञान

से जुड़ने का अवसर मिला है। अच्छी बातों और यथार्थता व अनेकांत का विकास होता रहे।

अनेकांत में समन्वय की बात है। इसका मतलब यह नहीं है कि हर बात सही ही होगी। अपना-अपना चिंतन हो सकता है। तत्त्व बोध की बात को हम समझने का प्रयास करें कि किस अपेक्षा से बात कही गई है। हमारे साधुओं में ज्ञान का, साधना का और वकृत्व कला का भी यथायोग्य विकास होता रहे।

आज सरदार पटेल के नाम से बने विद्या संस्थान आए हैं। यहाँ विद्या के विकास के साथ जीवन विज्ञान, अच्छे संस्कारों का भी विकास होता रहे।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने कहा कि हम अपने आपको सौभाग्यशाली मानते हैं कि हमें इस वैज्ञानिक व टेक्नोलॉजी

के युग में भगवान महावीर के दर्शन को समझने, जानने का अवसर मिल रहा है। जीवन की सफलता का सबसे बड़ा सूत्र है—जागरूकता। बिरले लोग ऐसे होते हैं, जो भीतर और बाहर दोनों ओर से जागरूक होते हैं। भगवान महावीर ऐसे ही बिरले व्यक्तित्व थे। उनकी साधना का काल जागरूकता का काल था।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने कहा कि अनेकांत में समन्वय की बात है, जहाँ भिन्न-भिन्न वस्तुओं में एकत्व देखा जा सकता है। वस्तु अनंतधर्मा होती है और देखने की दृष्टियाँ भी भिन्न होती हैं। एकांगी दृष्टि से सत्य को प्राप्त नहीं किया जा सकता। सत्य को प्राप्त करने के लिए अनेकांत की दृष्टि से देखना होगा।

मुख्य मुनि महावीर कुमार जी ने कहा कि भगवान महावीर ने साधना करके मानव से महामानव के प्रतिमान को साकार किया। वे एक महान वैज्ञानिक थे, उन्होंने भीतर की खोज की। उन्होंने अपने भीतर केवलज्ञान, केवलदर्शन को जागृत कर अति सूक्ष्म रहस्यों को जनता के सामने प्रस्तुत किया, जो कि आज के वैज्ञानिकों के लिए भी बहुत बड़ा चिंतनीय विषय बना हुआ है।

पूज्यप्रवर के स्वागत में हिमांशु बेगवानी, वीणा देवी, मिहिका बेगवानी, सरदार पटेल कॉलेज से अल्पेश भाई शाह ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। व्यवस्था समिति की ओर से अल्पेश भाई का सम्मान किया गया।

पूज्यप्रवर प्रातः लगभग १३ किलोमीटर का विहार कर बोरियावी के सरदार पटेल कॉलेज में प्रवास हेतु पधारे। आणंद शहर पास में ही है। प्रवचन से पूर्व कॉलेज के विद्यार्थियों के साथ मुनि मनन कुमार जी ने अणुव्रत के बारे में चर्चा-वार्ता कर अणुव्रत को विस्तार से समझाया।

## ज्ञान के अथाह सागर से मोती चुनें : आचार्यश्री महाश्रमण

नडियाड बाहर, २ अप्रैल, २०२३

तेरापंथ के महासूर्य आचार्यश्री महाश्रमण जी सूरत की ओर अग्रसर हैं। प्रातः लगभग १३ किलोमीटर का विहार कर परम पावन नडियाड के श्री बंगलो सोसायटी के परिसर में पधारे। मंगल देशना प्रदान करते हुए पूज्यप्रवर ने फरमाया कि ज्ञान के विषय भी बहुत हैं। अपने-अपने ग्रंथों में अनेक ज्ञान की बातें हैं।

साधारण मनुष्यों में पूरी दुनिया में कौन ऐसा आदमी होगा जो सारे ग्रंथों को पढ़ चुका होगा? भाषाएँ भी अनेक हैं। शब्दों-अक्षरों से ग्रंथ बनते हैं। शब्द तो अपने आपमें जड़ हैं, पर उन शब्दों में जो अर्थ निहित है, उसका बड़ा महत्त्व है। अर्थ के लिए शब्द है। पर इन सबको कब तक पढ़ें, काल सीमित है। बीच-बीच में विज्ञ-बाधाएँ आ सकती हैं, पर सारभूत बातों को पढ़ लो।

(शेष पृष्ठ २ पर)





अक्षय तृतीया हेतु सूरत व्यवस्था समिति ने किया दायित्व स्वीकरण

## ज्ञान प्राप्ति का उत्तम साधन है श्रोतेन्द्रिय : आचार्यश्री महाश्रमण

अमराईवाड़ी ओढ़व, अहमदाबाद

२६ मार्च, २०२३

तेरापंथ के महासूर्य आचार्यश्री महाश्रमण जी का अहमदाबाद के २९ दिवसीय प्रवास का शिखर दिन। परमपावन लगभग ७ किलोमीटर का विहार कर अमराईवाड़ी क्षेत्र के सिंधवी भवन में विशाल जुलूस के साथ पधारे। सूरत से लगभग २१०० लोग दायित्व हस्तांतरण हेतु पहुंचे।

महामनीषी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारे शरीर में पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ हैं, उनमें एक इंद्रिय जो पंचेन्द्रिय होने का प्रमाण है; वह है श्रोतेन्द्रिय। इस इंद्रिय के बिना कोई जीव पंचेन्द्रिय नहीं हो सकता। यह है, तो जीव पंचेन्द्रिय ही है। इंद्रियों की दृष्टि से सर्वाधिक विकसित प्राणी श्रोतेन्द्रिय वाला ही होता है।

हमारे जीवन में हम सुनते भी कितना हैं। सामान्य रूप से आदमी बोले कम, सुने ज्यादा। श्रोतेन्द्रिय ज्ञान प्राप्ति का एक अच्छा साधन है। आदमी सुनकर कल्याण को जानता है और पाप को भी जान लेता है। अच्छा-बुरा जानने के बाद जो श्रेय है, उसका आचरण करना चाहिए। पाप से बचने का प्रयास करना चाहिए।

गांधीजी के तीन बंदर जो बुरा मत देखो, बुरा मत बोलो और बुरा मत सुनो के उदाहरण हैं। चौथी बात है बुरा सोचो मत। साधु जो साधनाशील एवं ज्ञानवान है, ऐसे



साधु के मुख से आर्षवाणी की बातें सुनने को मिलती हैं तो कान भी धन्य हो जाते हैं। पवित्र वाणी कानों की अतिथि बनती है।

साधु की पर्युपासना करने से प्रवचन श्रवण को मिलता है। श्रवण से ज्ञान, विज्ञान का विकास होते हुए मोक्ष को प्राप्त किया जा सकता है। साधु की वाणी कल्याणी हो सकती है। ये माया साथ में जाने वाली नहीं है, यह एक प्रसंग द्वारा समझाया। संतों-गुरुओं की वाणी दिशा और दशाओं

को बदलने वाली हो सकती है।

हमारे २९ दिवसीय प्रवास का लोगों ने अच्छा लाभ उठाने का प्रयास किया है। हमें अब सूरत-मुंबई की ओर आगे बढ़ना है। २९ वर्षों बाद पुनः अहमदाबाद की यात्रा हो रही है। जितना आध्यात्मिक-धार्मिक प्रचार-प्रसार व सेवा हो सके, करते रहें। आदमी को धैर्य से सुनना चाहिए। सुनकर लाभ उठाने का प्रयास करें।

आज अमराईवाड़ी-ओढ़व आए हैं। यहाँ साध्वी सरस्वती जी का पिछला चातुर्मास हुआ था। ये मुनि राजेंद्र कुमार जी की बहन हैं। खूब अच्छा काम कर रही हैं और करती रहें।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि दुर्लभता के बारे में बताया गया है कि इंद्रिय विषयों का निग्रह, तत्त्व ज्ञान और सहज अवस्था को प्राप्त करना दुर्लभ है, पर ये सुलभ हो सकते हैं, जब गुरु का अनुग्रह प्राप्त हो जाता है। गुरु प्राप्त होने पर ही आदमी असंभव को संभव बना सकता है। भारतीय संस्कृति में गुरु का सर्वोच्च आसन बताया गया है। हमें ऐसे गुरु प्राप्त हुए हैं, जो हमारे कल्याण की बात करते हैं।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में नरेंद्र चपलोट ने गीत प्रस्तुत किया। उपासक अरविंद डोसी, उपासिका मंजू गेलड़ा, सज्जनराज सिंधवी ने अपने-अपने भाव

व्यक्त किए। तेरापंथी सभा के मंत्री गणपत हिरण, सभाध्यक्ष रमेश पगारिया, महिला मंडल अध्यक्ष संगीता सिंधवी, तैयुप अध्यक्ष हेमंत पगारिया, वर्धमान स्थानकवासी संघ से पुखराज कूकड़ा ने अपनी-अपनी भावनाएँ अभिव्यक्त की। महिला मंडल ने गीत प्रस्तुत किया एवं ज्ञानशाला की सुंदर प्रस्तुति हुई। दिगंबर समाज से जनरल जैन ने भावना व्यक्त की। उनका सम्मान किया गया।

शिल्पा भंसाली व नीता भंसाली ने ३० की तपस्या के प्रत्याख्यान पूज्यप्रवर से ग्रहण किए। अहमदाबाद की सभी संस्थाओं ने विदाई गीत का सुमधुर संगान किया।

साध्वी सरस्वती जी ने समझाया कि अमराईवाड़ी में आज अकल्पित महक आ रही है। गुरुदेव के संयम की खुशबू से शिलाएँ भी महक उठती हैं।

**दायित्व हस्तांतरण का आयोजन**

आज सूरत (जहाँ आगामी अक्षय तृतीया व अनेक कार्यक्रम आयोजन होने वाले हैं) से लगभग २१०० श्रावक-श्राविकाएँ पूज्यप्रवर की सेवा का दायित्व ग्रहण करने आए।

अहमदाबाद प्रवास व्यवस्था समिति से गौतम बाफना ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। सूरतवासियों ने समूह गीत से अपनी भावना अभिव्यक्त की। पूज्यप्रवर ने मंगलपाठ सुनाया और सूरतवासियों ने अहमदाबादवासियों से दायित्व ग्रहण किया।

पूज्यप्रवर ने अमराईवाड़ी क्षेत्र में वर्षोंतक करने वालों को इस वर्ष के प्रत्याख्यान करवाए।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

### ज्ञान के अथाह सागर से मोती...

#### (प्रथम पृष्ठ का शेष)

श्रुत केवली आचार्य शंयम्भव ने अपने शिष्य पुत्र के लिए सार रूप में दसवें आलियं आगम की रचना की थी। इसमें साधु-जीवन की उपयोगी बातें हैं। ज्ञान पाने के लिए प्रयत्न भी करें, पढ़ें, समय लगाएँ, ज्ञान में मन लगाएँ। रटना चाहिए। व्यक्ति परिश्रम करे तो ज्ञान के क्षेत्र में आगे बढ़ा जा सकता है।

ज्ञान के साथ-साथ अनुप्रेक्षा, चिंतन-मनन भी होता रहे। जयाचार्य प्रज्ञा पुरुष थे। उन्होंने कितना ज्ञान ग्रहण किया होगा। पढ़ने में आगे बढ़ना है तो नींद को ज्यादा बहुमान न दें। आलस्य में न रहें। सदा स्वाध्याय में रत रहो, प्रमाद मत करो। ज्ञानी लोगों से ज्ञान ग्रहण करने का प्रयास करें। ज्ञान के प्रति सम्मान रखें। दूसरे के ज्ञान प्राप्त करने में बाधा नहीं डालनी चाहिए।

ज्ञान से प्रकाश मिलता है, पथ आलोकित हो जाता है। ज्ञान आ जाए तो उसका आचरण भी हो सकता है। अज्ञान का अंधकार दूर हो, अज्ञान का अनुभव करना भी अच्छी बात है। जो अपने अज्ञान को जानता है, वह सबसे बड़ा ज्ञानी होता है। हम ज्ञान के क्षेत्र में स्वाध्याय, परिश्रम व चिंतन-मनन के द्वारा आगे बढ़ने का प्रयास करें।

आज हम श्री बंगलों में आए हैं। हमें भी शाश्वतता प्राप्त हो। यहाँ भी धर्म के प्रति जागरणा रहे। हमारे संत भी ज्ञान का कार्य करते आए हैं।

पूज्यप्रवर के स्वागत में नडियाड से सुशील भटेवरा, प्राची, कन्या मंडल, स्थानकवासी समाज से सज्जन दुगड़, साजन चोपड़ा, राजुभाई पटेल ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। तेरापंथ महिला मंडल द्वारा गीत की प्रस्तुति की गई। श्री बंगलो सोसायटी के निवासियों का सम्मान किया गया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

## मानव जीवन में साधना से परम पद की प्राप्ति संभव : आचार्यश्री महाश्रमण

असलाली, अहमदाबाद

३० मार्च, २०२३

चैत्र शुक्ला नवमी, रामनवमी और आचार्य भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस है। लगभग २६३ वर्ष पूर्व आचार्य भिक्षु ने एक धर्मक्रांति मारवाड़ के बगड़ी नगर में की थी। बगड़ी की जैतसिंह जी की छतरी आज भी हमें उस आत्मवीर की याद दिलाती है।

अहमदाबाद का २९ दिवसीय प्रवास पूर्ण कर आचार्य भिक्षु के परंपरा पट्टधर आचार्यश्री महाश्रमण जी ने सूरत की ओर अपने चरण आगे बढ़ाए। लगभग ११ किलोमीटर का विहार कर पूज्यप्रवर असलाली के प्राथमिक विद्यालय में पधारे।

धर्मज्ञाता ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि मनुष्य जीवन के रूप में एक दुर्लभ जीवन हमें प्राप्त हुआ है। शास्त्र

में मनुष्य जीवन को दुर्लभ निरूपित किया गया है। मनुष्य एक ऊँचा प्राणी है। मानव जीवन में साधना करके आत्मा से परमात्मा के पद को प्राप्त किया जा सकता है। परमात्मा का स्थान मिलना मानो साधना साध्य है।

साधुत्व आए बिना तो सिद्धि मिलती नहीं। भावों में साधुत्व आएगा ही। वेष चाहे साधु का हो या न हो। द्रव्य साधु में भाव साधुत्व नहीं तो कल्याण नहीं हो सकता। आज चैत्र शुक्ला नवमी का महत्त्वपूर्ण दिवस है, जो रामचंद्रजी से जुड़ा दिन रामनवमी है। उनमें पद लोलुपता नहीं थी, उदात्तता थी।

आज का दिन हमारे धर्मसंघ के प्रथम आचार्य, आचार्य भिक्षु से धर्मक्रांति के रूप में जुड़ा हुआ दिन है। आज के दिन उन्होंने एक संप्रदाय स्थानकवासी से

अभिनिष्क्रमण किया था। आज भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस है।

आचार्य भिक्षु युवावस्था में गार्हस्थ्य अभिनिष्क्रांत हुए थे। वो जब गर्भ में आए तो उनकी माता दीपांजी ने सिंह का स्वप्न देखा था। क्रांति के साथ संघर्ष आ सकता है। समस्या का समाधान तपस्या से हो सकता है। 'प्रभो! तुम्हारे पावन पथ पर जीवन अर्पण है सारा' का सुमधुर संगान करवाया। तेरापंथ मेरा पंथ बना रहे। मैं आचार्यश्री भिक्षु को श्रद्धायुक्त वंदना करता हूँ।

असलाली गाँव में आज आए हैं, गाँव में सद्भावना, नैतिकता का माहौल बना रहे।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने समझाया कि अहंकार, क्रोध, प्रमाद, राग आदि विद्या ग्रहण के बाधक तत्त्व हैं।

## सुखी जीवन के रहस्य कार्यशाला का आयोजन

रिसड़ा, हुगली।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में सुखी जीवन के रहस्य विषय पर कार्यशाला तेरापंथ सभा में आयोजित हुई। इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि अपनी आत्मा ही कर्ता है, अपनी आत्मा ही भोक्ता है। अपनी आत्मा ही सुख देने वाली है, अपनी आत्मा दुःख भी देने वाली है। सत्प्रवृत्ति में लगी आत्मा सुख को प्राप्त होती है।

जो कलात्मक ढंग से जीवन जीते हैं वे सुखी होते हैं। सुखी जीवन श्रेष्ठ जीवन

जीने के लिए वर्तमान में जीना, इच्छा संयम, अनासक्ति, विनम्रता, संतुलन संयम, सकारात्मक सोच, प्रसन्नता ध्यान, स्वाध्याय सत्संगत इन सूत्रों की आराधना करनी चाहिए। मुनिश्री ने आगे कहा कि प्रसन्न रहने से सभी दुखों की हानि होती है। आत्मा को हमेशा प्रसन्न रखें।

मुनिश्री ने कहा कि इच्छाओं का जितना संयम होगा, उतना ही जीवन सुखी होगा। इच्छाओं का संयम करना चाहिए। मुनि परमानंद जी ने कहा कि

शुद्ध विचार व संतुलित मानसिक विकास से व्यक्ति का जीवन सुखी हो सकता है।

मुनि कुणाल कुमार जी ने गीत प्रस्तुत किया। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष सुरेंद्र बैद व उपासक प्रकाश सुराणा ने अपने विचार व्यक्त किए। उपासक सुशील बाफना ने जैन विद्या व कोलकाता तेरापंथ सभा के अध्यक्ष अजय भंसाली ने महावीर जयंती के संदर्भ में जानकारी प्रदान की। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद जी ने किया।

## संस्कारों के बीजारोपण का सशक्त माध्यम है ज्ञानशाला

केसुम्बला (सिवांगी-मालाणी)।

मुनि सुमति कुमार जी की प्रेरणा से तेरापंथी सभा, केसुम्बला (मारवाड़) के अंतर्गत ज्ञानशाला का गठन हुआ। मुनि सुमति कुमार जी ने कहा कि ज्ञानशाला भावी पीढ़ी में सत्-संस्कारों के बीजारोपण का सशक्त माध्यम है।

इस कार्य की समायोजना के लिए सुरेंद्र सालेचा, ज्ञानशाला-मारवाड़ आंचलिक संयोजक, मोतीलाल जीरावला, संयोजक पारमार्थिक शिक्षण संस्था, धनराज ओस्तवाल, अध्यक्ष तेरापंथी सभा, बालोतरा तथा कार्यकारिणी सदस्य तेरापंथी महासभा, कमलेश कोचर, मंजु देवी कोचर, इंदु तथा सपना फलसुंड का मार्गदर्शन, सहयोग रहा।

ज्ञानशाला में ज्ञानार्थियों को ज्ञानार्जन देने के लिए प्रियंका देवी लोढ़ा, अनिता देवी लोढ़ा, पायल बुरड़ तथा देवी तातेड़ ने प्रशिक्षण देने का संकल्प व्यक्त किया।

## आचार्य भिक्षु की मासिक तिथि तथा महावीर स्वामी जन्म कल्याणक कार्यक्रम

सिरियारी।

चैत्र शुक्ला त्रयोदशी का दिवस दो-दो विशिष्ट त्योहार लेकर आया। आचार्य भिक्षु की मासिक तिथि तथा महावीर स्वामी का जन्म कल्याणक वर्ष की तिथि। आचार्य श्री भिक्षु समाधि स्थल संस्थान के द्वारा आयोजित प्रति माह के इस भक्ति रस के कार्यक्रम कुछ विशिष्ट रहे। प्रातःकाल से ही लोगों का उत्साह देखते ही बन रहा था। प्रातःकाल एक रैली का

आयोजन किया गया, जिसमें सैकड़ों लोगों ने भाग लिया, विशेष बात यह थी कि इस रैली में जैनों के साथ जैनेतर लोग भी शामिल थे। कार्यक्रम की शुरुआत भक्तांमर के पाठ से हुई, फिर अणुव्रत गीत प्रार्थना हुई तथा वृहद मंगलपाठ मुनि आकाश कुमार जी के द्वारा हुआ।

रैली के बाद 'खोजें महावीर' प्रतियोगिता का आयोजन हुआ तथा उसके बाद 'महावीर को जानो'

प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। उसमें प्रसन्न कोठारी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। दोपहर के बहुप्रतिक्षित कार्यक्रम 'भिक्षु भक्ति कार्यक्रम' में बाहर से समागत बाल कलाकारों ने मनमोहक प्रस्तुति दी।

दोनों बाल कलाकारों (जयपुर से तनिषा लुणिया तथा आमेत से प्राची कोठारी) की सुमधुर प्रस्तुतियाँ रहीं।

कार्यक्रम में दिल्ली, मंबई-भुज, चैन्नई, गुजरात, हरियाणा, इंदौर, जयपुर, मेवाड़-पाली, मारवाड़ आदि क्षेत्रों के लोग उपस्थित थे। दक्षिण हावड़ा की महिला मंडल की टीम भी उपस्थित रही। दक्षिण हावड़ा महिला मंडल अध्यक्ष चंदकांता पुगलिया, सिरियारी सेवारत पारसमल तथा जयपुर के श्रावक पूनमचंद सिंघवी ने गीत का संगान किया। पाली से समागत राहुल बालड़ ने कार्यक्रम का संचालन किया। सुनित लुणिया ने गीत की प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम के अंत में सिरियारी ऑफिस के महावीर ने कलाकारों व प्रसन्न का मोमेंटो के द्वारा सम्मान किया। संपूर्ण कार्यक्रम में अभातेयुप की भागीदारी रही।

## मुनि सिद्धार्थ कुमार जी की तेरह की तपस्या

गुरुकुलवास।

महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी के पावन सान्निध्य एवं डॉ० मुनि मदन कुमार जी की प्रेरणा एवं साधु-साध्वियों के सहयोग से कच्छ फतेहगढ़, गुजरात के मुनि सिद्धार्थ कुमार जी ने गुरुकुलवास में गुजरात के अहमदाबाद शहर में गुरुदर्शन के दिवस से ही तपस्या प्रारंभ की।

मुनिश्री की गुरुदेव के गुजरात पदार्पण पर गुरुदेव के लिए उपहार या भेंट त्याग, तपस्या के रूप में कही जा सकती है। मुनिश्री का अभी सातवाँ वर्षीतप चल रहा है। वर्षीतप में 9 से 92 तक की श्रृंखला संपन्न कर चुके हैं। यह तेरापंथ की 93 की तपस्या 22 मार्च को सानंद संनन्न हुई। समण पर्याय में 92 वर्षों में लगभग 50 देशों की यात्रा में अमेरिका 90 बार जा चुके हैं। मुनि पर्याय का वर्तमान में 96वाँ वर्ष चल रहा है।

## महावीर जयंती के उपलक्ष्य में गीत

### धर्म सारथी बन आया

● डॉ० साध्वी सुधाप्रभा ●

वीर-प्रभु की जन्म-जयंती, आनंद धन है मंडराया।  
माँ त्रिशला का लाल दुलारा, धर्म सारथि बन आया।।

वीरप्रभु के जन्मोत्सव पर, चिहुंदिशि है खुशियाँ छाई।  
सिद्धार्थ नृप के घर बजी है, देव-दुंदुभि शहनाई।  
जन्मोत्सव पर मेरु नग पर, देवों का टोला आया।।

इंद्रादिक देवों का मन यह शंकित होकर सोच रहा।  
होगा सहन जलाभिषेक क्या? चिंतित मानस बोल रहा।  
मेरु-पर्वत को कंपित कर, प्रभु ने पौरुष दिखलाया।।

चौसठ इंद्र झुके चरणों में, गौरव-गाथा गाते हैं।  
तीर्थकर महावीर प्रभु को, पाकर मोद मनाते हैं।  
नाच रहे मन-मोर सभी के, घर आँगन है मुस्काया।।

दीक्षा लेकर वीर प्रभु ने काटी कर्मों की कारा।  
नहीं घबराया कष्टों में भी, धर्म-जगत को वो तारा।  
कितनों की नैया को प्रभुवर! तुमने पार है पहुँचाया।।

चंदना का वीर प्रभु ने, निज हाथों उद्धार किया।  
चंडकौशिक नाग को भी, बोध देकर शांत किया।  
अर्जुनमाली-सा हत्यारा, वीर शरण पा हरसाया।।

महावीर के पदचिहनों पर हम सब कदम बढ़ाएँगे।  
साम्य योग की करें साधना, वीर हम बन जाएँगे।  
नमो-नमो महावीर जयंती, उत्सव सबको मनभाया।।

लय : कलियुग बैठा मार---

## वरिष्ठ जन के अनुभवों से समाज लाभान्वित हो सकता है दिल्ली।

वरिष्ठ जन अनुभवों का खजाना होता है। उनके अनुभवों से समाज लाभान्वित हो सकता है। वरिष्ठ जन के मार्गदर्शन से धार्मिक और सामाजिक कार्यों को सुगमता से किया जा सकता है। इस आशय के उद्गार वयोवृद्ध साध्वी शासनश्री साध्वी संघमित्रा जी ने तेरापंथी सभा, दिल्ली द्वारा समायोजित 'वरिष्ठ जन सम्मान व तप अनुमोदना कार्यक्रम' में प्रकट किए।

इस कार्यक्रम में शासनश्री साध्वी शीलप्रभा जी व समणी मंजुप्रज्ञा जी के भी उद्बोधन हुए। कार्यक्रम में 20 वर्ष व उससे ऊपर की वय के श्रावक-श्राविकाओं को सम्मानित किया गया तथा 95 व ऊपर के तपस्या वालों की अनुमोदना की गई। लगभग 980 से अधिक लोगों को सम्मानित किया गया। समाज भूषण मांगीलाल सेठिया, वरिष्ठ श्रावक टोडरमल लालाणी, हनुमानमल कोठारी आदि ने संस्मरणात्मक वक्तव्य प्रस्तुत किए। सभा के अध्यक्ष सुखराज सेठिया ने सभी का स्वागत, अभिनंदन व तप अनुमोदना की।

कार्यक्रम संयोजक नत्थुराम जैन व पूर्वाध्यक्ष तेजकरण सुराणा के प्रासंगिक वक्तव्य हुए। महामंत्री प्रमोद घोड़ावत ने सभी का आभार ज्ञापन किया। महिला मंडल ने गीत प्रस्तुत किया। संचालन संयोजक प्रदीप संचेती ने किया। कार्यक्रम की सफलता में बाबूलाल दुगड़, सुभाष सेठिया, अशोक संचेती, संजय संचेती, संजीव जैन, विकास बोथरा, विकास सुराणा, सुरेंद्र नाहटा, सुरेंद्र तातेड़, राजेश बैगाणी, दीपक जैन, अरविंद दुगड़, प्रमोद संचेती, प्रसन्न पुगलिया, पवन डोसी आदि अनेक कार्यकर्ताओं का श्रम रहा। सम्मान करने वालों में पन्नालाल बैद, गोविंद बाफना, सुशील कुहाड़, पुखराज सेठिया, शांति कुमार जैन आदि शामिल थे।

कार्यक्रम से सभी वरिष्ठजन प्रसन्नता का अनुभव कर रहे थे। उन्हें स्मृति स्वरूप उनका फोटो भी तत्कालमय फ्रेम उपलब्ध करवाया गया।



◆ आदमी को अपनी सुख-संपदा दूसरों के मालिकाना में नहीं देनी चाहिए। स्वयं की प्रसन्नता स्वयं के हाथ में रहे, ऐसी साधना होनी चाहिए।

—आचार्यश्री महाश्रमण

5



अखिल भारतीय  
तेरापंथ टाइम्स

10 - 16 अप्रैल, 2023

## शासनमाता का जीवन सबके लिए प्रेरणादायक था

कांदिवली (मुंबई)।

शासनश्री साध्वी विद्यावती जी 'द्वितीय' के सान्निध्य में होली चातुर्मास एवं शासनमाता की प्रथम पुण्यतिथि का आयोजन किया गया। कांदिवली तेममं के मंगलाचरण से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। मलाड तेरापंथी सभा के अध्यक्ष इंद्रमल कच्छारा, कांदिवली तेयुप के अध्यक्ष नवनीत कच्छारा, कांदिवली तेममं की सह-संयोजिका अलका पटावरी आदि ने अपनी भावनाएँ व्यक्त की।

प्रेक्षा प्रशिक्षिका पारसमल दुगड़ ने रंगों के आधार पर ध्यान का प्रयोग करवाया। साध्वी मृदुयशा जी ने कविता के माध्यम से रंगों पर प्रकाश डाला।

साध्वी विद्यावती जी ने होली से संबंधित घटना पर प्रकाश डाला एवं होली के रंग आत्मा के संग विषय की सुंदर व्याख्या करते हुए आठ कर्मों की होली खेलने का आह्वान किया। शासनश्री साध्वीश्री जी ने शासनमाता के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए उनके व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व को शब्दों में उजागर किया।

साध्वी प्रेरणाश्री जी ने गीत का संगान किया। कांदिवली तेरापंथ कन्या मंडल ने शासनमाता के इंद्रधनुषी व्यक्तित्व पर इंद्रधनुष नामक कार्यक्रम की प्रस्तुति दी।

साध्वी प्रियंवदा जी ने कहा कि साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी की श्रमनिष्ठा, विनय निष्ठा, समर्पण निष्ठा एवं

गुरु निष्ठा बेमिशाल थी। सैकड़ों साधु-साध्वियों के जीवन को उन्होंने प्रेरणा पाथेय से लाभान्वित कर विकास का मार्ग प्रशस्त किया।

श्री तुलसी महाप्रज्ञ फाउंडेशन के अध्यक्ष विनोद बोहरा ने शासनमाता के प्रति श्रद्धांजलि संप्रेषित की। मुंबई तेममं की अध्यक्ष रचना हिरण एवं कांदिवली तेरापंथ सभा के अध्यक्ष पारसमल दुगड़ ने भी होली पर्व की शुभकामनाएँ देते हुए शासनमाता को भावांजलि समर्पित की। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीवृंद द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुआ। दो चरणों में आयोजित कार्यक्रम का संचालन डॉ० साध्वी ऋद्धियशा जी ने किया।

## भगवान ऋषभदेव का दीक्षा कल्याणक

हैदराबाद।

ज्ञानबाग हैदराबाद में नंदलाल वैद के निवास स्थान पर साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में भगवान ऋषभदेव का दीक्षा कल्याणक मनाया गया। इस अवसर पर साध्वीश्री जी ने कहा कि साधना के लिए प्रसन्नता आवश्यक है। बाध्य प्रसन्नता स्थायी नहीं होती। शाश्वत और आनंद के लिए आत्मा के निकट रहना आवश्यक है। महावीर-दर्शन जीवन में उतारने का प्रयास करना चाहिए। अध्यात्म और धर्म की आराधना करने वाला विकट परिस्थितियों में भी रास्ता खोज लेता है।

साध्वीश्री जी ने कहा कि दुख को परकृत न मानो। जिंदगी में सुखी बनने के लिए परिस्थिति को बदल लीजिए। यदि परिस्थिति न बदल सके तो मनःस्थिति को

बदल लें। आप दुख से बच जाएँगे। सुखी रहने के लिए प्रबल साधना है—संयम का जीवन।

आनंदमय जीवन के लिए तप का मार्ग भी स्वीकार किया जा सकता है। अपनी शक्ति को तप साधना में नियोजित करें। साध्वीश्री जी ने युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के संयम अमृत महोत्सव के अवसर पर परिषद को वर्षीतप करने की

प्रेरणा दी। प्रेरणा से प्रेरित होकर मानकचंद्र रांका एवं ललिता चतुर्मुखा ने अग्रिम वर्षीतप करने का व्रत्याख्यान किया।

कार्यक्रम के प्रारंभ में साध्वीश्री जी द्वारा आदिनाथ की आराधना में जप-अनुष्ठान कराया गया। जगत पारख ने गीत का संगान किया। साध्वी सुदर्शनप्रभा जी व साध्वी शौर्यप्रभा जी ने आत्मभाव प्रकट किए।

## पचरंगी सामायिक का आयोजन

हासन।

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप के तत्वावधान में तेरापंथ सभा भवन में पचरंगी सामायिक साधना का आयोजन हुआ। इस आयोजन में सकल श्वेतांबर समाज ने बड़े ही उत्साह से भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन ममता कोठारी ने किया।

हासन सभा के अध्यक्ष सुरेंद्र तातेड़, हासन महिला मंडल के अध्यक्ष संगीता कोठारी, तेयुप के अध्यक्ष गौरव गुलगुलिया एवं गणमान्यजनों की उपस्थिति रही।



## अभातेयुप योगक्षेम योजना

योगक्षेम	अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र - 2019-2021	51,00,000
* श्री बच्छावत परिवार, सरदारशहर-जयपुर		5,00,000
* श्री बसंत अर्पित नाहर, महेंद्रगढ़-उधना		5,00,000
* श्री राकेश कठोतिया, लाडनू-मुंबई		5,00,000
* श्री रूपचंद कोडामल जैनसुख दुगड़, बीदासर-मुंबई		5,00,000
* श्री शंकरलाल विमल विनीत पितलिया, भीलवाड़ा		5,00,000
* श्री शांतिलाल पारसमल दक उमरी, उधना-सूरत		5,00,000
* श्री सुमतिचंद गोठी, सरदारशहर-मुंबई		5,00,000
* श्री विपिन जैन पारख, सिरसा-मुंबई		5,00,000
* श्री राजकुमार गौतम प्रसाद जैन, बेलपाड़ा-उड़ीसा		5,00,000
* श्री सागरमल दीपक विमल कमलेश श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा		5,00,000
* श्री जैनसुख दीपक बोधरा, छपर-सिलीगुड़ी		5,00,000
* श्री बसंत नवलखा, बीकानेर		5,00,000
* श्री बिमल चोपड़ा, गंगाशहर-यमुनानगर		5,00,000
* श्रद्धानिष्ठ श्रावक केशरीमल, अनिलकुमार, संजयकुमार, सुनीलकुमार चंडालिया (गंगापुर) सूरत		5,00,000
* श्री छत्तरमल गणेशमल विनीतकुमार बैद, राजलदेसर-चेन्नई		5,00,000

## संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

### नामकरण संस्कार

जयपुर।

कृति-प्रवीण जैन की सुपुत्री एवं सीमा-राजेंद्र जैन की सुपौत्री का नामकरण संस्कार संस्कारक श्रेयांस बैंगानी व सौरभ जैन ने मंगलभावना पत्रक स्थापित करवाकर जैन संस्कार विधि से संपन्न करवाया। संदीप भंडारी ने नामकरण पत्रिका का वाचन किया।

जैन संस्कार विधि के संयोजक कुलदीप बैद सहित समाज के अन्य गणमान्य महानुभाव एवं पारिवारिकजनों की उपस्थिति में परिषद् परिवार की ओर से मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया।

विजयनगर।

बैंगलोर प्रवासी श्रेयांस-कृतिका की सुपुत्री का नामकरण कार्यक्रम जैन संस्कार विधि से संस्कारक विकास बांठिया ने विधि-विधान एवं मंगल मंत्रोच्चारण से संपन्न करवाया।

परिषद द्वारा बांठिया परिवार को मंगलभावना पत्रक एवं नामकरण पत्रक भेंट किया गया। बांठिया परिवार ने तेयुप, विजयनगर का आभार व्यक्त किया।

### नूतन गृह प्रवेश

गंगाशहर।

शुभकरण-सरोज देवी सिपानी के नूतन गृह का शुभारंभ जैन संस्कार विधि द्वारा जैन संस्कार रतनलाल छलाणी और पीयूष लुणिया ने विधि-विधानपूर्वक मांगलिक मंत्रोच्चारण के साथ संपन्न करवाया।

सभी ने तेयुप, गंगाशहर द्वारा आयोजित हुए जैन संस्कार विधि के कार्यक्रम की सराहना की। मंगलपाठ के साथ कार्यक्रम परिसंपन्न हुआ।

### नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

सूरत।

लाडनू निवासी, सूरत प्रवासी राकेश खटेड़ के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक मनीष कुमार मालू ने संपूर्ण विधि व मंगल मंत्रोच्चारण से संपन्न करवाया।

राकेश खटेड़ ने सभी का आभार ज्ञापन किया। तेयुप, सूरत की ओर से मंगलभावना पत्रक व मंगलकामना पत्र भेंट किया गया।

## आहट उजले कल की, रजत उत्कर्ष पार्ट-२ का आयोजन

घाटकोपर।

साध्वी निर्वाणश्री जी के सान्निध्य में रजत उत्कर्ष पार्ट-२ का आयोजन किया गया। 'आहट उजले कल की' कार्यक्रम में उपस्थित श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए साध्वी निर्वाणश्री जी ने कहा कि सुमंगल साधना श्रावक समाज को आचार्यश्री महाश्रमण जी का अनुपम वरदान है। यह जीवन-भर की विशेष साधना है। हर व्यक्ति का आत्मबल जगे यह संभव नहीं पर तीन प्रतिमा की साधना छह महीने की आंशिक साधना है।

साध्वी डॉ० योगक्षेमप्रभा जी ने कहा कि सम्यक् दर्शन का दीया जगे बिना उजाला नहीं होगा। ज्ञान और चरित्र तभी सम्यक् होंगे जब दर्शन विशुद्ध होगा। दर्शन विशुद्ध के अनंतर व्रतों का मार्ग खुलता है जो मोक्ष की ओर ले जाता है।

कार्यक्रम की शुरुआत मंगलाचरण से हुई, जिसे रंजना बाफना ने प्रस्तुति दी। उत्कर्ष के संयोजक रतन सियाल, तेरापंथ सभा, मुंबई के कार्याध्यक्ष नवरतनमल गन्ना, शांतिलाल बाफना व हस्तिमल डांगी ने प्रासंगिक अभिव्यक्ति दी। मंच संचालन सह-संयोजक तेजराज बंबोली ने किया। इस अवसर पर सम्यक् दर्शन प्रतिमा से जुड़ने वालों की संख्या ५८ हो गई। कार्यशाला अत्यंत सफल रही।



## भगवान महावीर जयंती पर कार्यक्रमों के आयोजन

### गांधीनगर, दिल्ली

जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, गांधीनगर, दिल्ली द्वारा २६२२वाँ महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, कृष्णानगर में आयोजित किया गया।

प्रभातफेरी के पश्चात कार्यक्रम का शुभारंभ मुनिश्री के मुखारविंद से नमस्कार महामंत्र से हुआ। निवर्तमान अध्यक्ष अनिल पटवा द्वारा श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन करवाया गया। तेयुप के कार्यकर्ताओं, महिलाओं, बहनों एवं ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं द्वारा गीतिकाओं का संगान किया गया। सभा अध्यक्ष कमल गांधी द्वारा स्वागतीय उद्बोधन दिया गया। दिल्ली सभा के महामंत्री प्रमोद घोड़ावत, शाहदरा सभा के अध्यक्ष पन्नालाल बैद, विकास मंच के मुख्य ट्रस्टी धर्मचंद सेठिया, कृष्णा नगर क्षेत्र के पार्षद संजीव कपूर एवं महिला मंडल की अध्यक्ष मंजु जैन आदि ने इस अवसर पर अपना वक्तव्य दिया।

मुनिश्री ने कहा कि अनेकांत, अपरिग्रह के सिद्धांत को अपनाकर जीवन को स्वस्थ बनाया जा सकता है, उन्होंने कहा कि 'स्वयं जागो औरों को जगाओ।'

तेयुप के उपाध्यक्ष अरविंद सिंधी, ओसवाल समाज के अध्यक्ष आनंद बुच्चा, अणुव्रत समिति के मंत्री धनपत नाहटा, दिल्ली सरकार तीर्थ यात्रा समिति के अध्यक्ष कमल बंसल, समाज सेवक एवं पूर्व पार्षद प्रत्याशी जुगल अरोड़ा सहित अनेक संस्थाओं के प्रतिनिधिगण सहित बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविका समाज इस कार्यक्रम में सहभागी बने। विकास मंच द्वारा भवन उपलब्ध करवाया गया। संयोजक धनेश डूंगरवाल, हनुमान बोथरा, रवि भरुंड एवं अमित बेगवानी सहित अनेक कार्यकर्ताओं का कार्यक्रम में श्रम नियोजित हुआ। महिला मंडल, तेयुप, ज्ञानशाला सहित अन्य संस्थाओं का इसमें विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। कार्यक्रम का संयोजन मंत्री हेमराज राखेचा ने किया। संघ गान के साथ कार्यक्रम संपन्न किया गया।

### ग्रीन पार्क, दिल्ली

ग्रीन पार्क गोयल भवन में समायोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए शासनश्री साध्वी रतनश्री जी ने कहा कि महापुरुष जब धरती पर अवतरित होते हैं। तब शुभ क्षण, शुभ बेला, शुभ नक्षत्र अपने आप आ जाते हैं। महावीर ने चैत्र शुक्ला त्रयोदशी की मध्य रात्रि में उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में जन्म लिया।

उस समय भूमि और आकाश

प्रफुल्लित थे। सब दिशाएँ आलोक से परिपूर्ण थी। वासंती पवन मंद-मंद गति से बह रही थी। वृक्ष-लताएँ फल-फूलों से लदी हुई थीं।

१२ दिनों के बाद नामकरण संस्कार हुआ। जब वर्धमान नाम रखा गया—कारण कि आप जब गर्भ में आए थे तब से लेकर जन्म तक राज्य में धन-धान्य, स्वर्ण-रजत, मणि-मुक्ता, बल, वाहन आदि में वृद्धि हुई, इस दृष्टि से राजा सिद्धार्थ ने वर्धमान नाम से अभिहित किया।

आपने ३० वर्ष की अवस्था में चढ़ते यौवन में सांसारिक बंधनों का विच्छेद करके चारित्र्य स्वीकार किया। वर्षों तक घोर तपस्याएँ कीं। भीषण संघर्षों को सहन किया। ध्यान-साधना से आत्मदर्शन के सागर में निमज्जन करते हुए कैवल्य ज्ञान उपलब्ध किया। विश्व को अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकांत का पाठ पढ़ाया।

शासनश्री साध्वी सुव्रतांजी, शासनश्री साध्वी सुमनप्रभा जी एवं साध्वी कार्तिकप्रभा जी ने महावीर के जीवन के संदर्भ में अनेकानेक घटना प्रसंगों का जिक्र किया। साध्वी चिंतनप्रभा जी ने सुमधुर स्वर लहरी से महावीर की अभिवंदना की।

ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने सुंदर प्रस्तुतियाँ दीं। प्रशिक्षिकाओं ने सामूहिक गीत प्रस्तुत किया।

दिल्ली तेरापंथ सभा के अध्यक्ष सुखराज सेठिया, पूर्व अध्यक्ष गोविंद बाफना, दक्षिण दिल्ली तेरापंथ सभा अध्यक्ष हारालाल गेलड़ा, प्रीतमपुरा तेरापंथ सभा मंत्री सुरेंद्र मालू, अणुव्रत न्यास के अध्यक्ष के०सी० जैन, संजय चोरड़िया, सुरेंद्र सोनी, जैन संस्कार समिति के अध्यक्ष सुशील डागा, माया दुगड़, हेमा चोरड़िया, सपना लालानी, दक्षिण दिल्ली महिला मंडल आदि वक्ताओं ने भावाभिव्यक्ति दी।

दक्षिण दिल्ली तेयुप ने रोचक एवं भावपूर्ण गीत का संगान किया। कार्यक्रम का संचालन दक्षिण दिल्ली तेरापंथ सभा की मंत्री अरुणा डूंगरवाल ने किया।

### जयपुर

बहुश्रुत परिषद की सदस्य शासन गौरव साध्वी कनकश्री जी के सान्निध्य में भगवान महावीर जन्म जयंती का कार्यक्रम भिक्षु साधना केंद्र, जयपुर में आयोजित हुआ। नमस्कार महामंत्रोच्चारण से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। निधि बोथरा ने महावीर अष्टकम् का संगान किया।

शासन गौरव साध्वी कनकश्री जी ने कहा कि अनुत्तर योगी भगवान महावीर आनंद के अक्षय स्रोत थे। उनके दर्शन को जीने वाला सदा सहज रूप से आनंदित रह सकता है। भगवान महावीर को महान पर्यावरण विज्ञानी और अहिंसा विज्ञानी

बताते हुए साध्वीश्री जी ने कहा कि जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण संकट आज वैश्विक गंभीर समस्याओं में एक है। महावीर के अहिंसा, समय और अपरिग्रह का संदेश और उसका पालन इस समस्या का स्थायी समाधान दे सकता है।

साध्वी मधुलता जी ने कहा कि आधुनिकता के नाम पर जो समाज में विकृतियाँ प्रवेश कर रही हैं, उसके बारे में जैन समाज को गंभीरता से सोचना है और सही कदम उठाना है। इस अवसर पर साध्वी संस्कृतिप्रभा जी ने भगवान महावीर के प्रति भावों की अभिव्यक्ति दी।

तेरापंथी सभा, जयपुर के प्रतिनिधि सुरेंद्र सेठिया, सी-स्कीम महिला मंडल, जयपुर की अध्यक्षा नीरू पुगलिया, कलाकार संपतमल गांधी, प्रज्ञा जैन ने प्रासंगिक विचार रखे। मास्टर प्रतीक लोढ़ा ने गीतिका के द्वारा श्रद्धासुमन अर्पित किए। सी-स्कीम महिला मंडल की महिलाओं ने सुमधुर गीत का संगान किया।

ज्ञानशाला के ज्ञानार्थी बच्चे—रिवा आंचलिया, मांवी सुराणा ने महावीर स्तुति में कलात्मक प्रस्तुति दी। शासन गौरव साध्वी कनकश्री जी द्वारा रचित गीतिका का साध्वी मधुलता जी एवं साध्वीवृंद ने संगान किया। कार्यक्रम का संयोजन साध्वी समितिप्रभा जी ने किया। कार्यक्रम में बाल, वृद्ध, युवकों की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

### छापर

महावीर जयंती के अवसर पर प्रातः प्रभात फेरी का आयोजन किया गया।

तेरापंथ के अलावा दूसरे समुदाय के लोगों ने भी इसमें भाग लिया। कार्यक्रम का प्रारंभ मुनिश्री के णमोकार महामंत्र के संगान से हुआ।

शासनश्री मुनि विजय कुमार जी ने कहा कि चैत्र शुक्ला १३ का दिन मानव जाति के अभ्युदय का दिन कहा जा सकता है। आज से २६२२ वर्ष पहले इसी दिन युगपुरुष महावीर के त्रिशला क्षत्रियाणी की कुक्षी से जन्म लिया था। राजा सिद्धार्थ ने महावीर के गर्भ में आने के साथ ही राजकोष में धन-धान्य की अपूर्व वृद्धि देखी तो गुणानुरूप वर्धमान नाम से उनको पुकारा जाने लगा।

महावीर ने अहिंसा का उपदेश तो ज्ञान प्राप्ति के बाद दिया था, किंतु गर्भावस्था में ही उन्होंने अहिंसा के सिद्धांत को साकार कर दिया था। उन्होंने संकल्प ले लिया कि मेरे माता-पिता जब तक जीवित रहेंगे, मैं दीक्षा नहीं लूँगा। इस घटना के पीछे उनके भीतर का करुणा भाव झलकता है। उनकी यह सोच कि मैंने कारण से माता-पिता को किसी तरह का मानसिक संक्लेश नहीं होना चाहिए, यह शिक्षा अगर आज की संतान अपने जीवन में उतार ले तो अहिंसा का स्रोत हर घर में प्रवाहित हो सकता है।

महावीर का बचपन बीता, यौवन की दहलीज पर कदम धरे। वे शादी नहीं करना चाहते थे, पर माता-पिता के अत्यधिक आग्रह के कारण यशोदा नाम की राजकुमारी के साथ उन्होंने विवाह किया। फिर भी वे विरक्ति का जीवन जी रहे थे। २८ वर्ष की

आयु में माता-पिता के दिवंगत होने के बाद ज्येष्ठ भ्राता नंदीवर्धन के कहने से महावीर ने ३०वें वर्ष में दीक्षा स्वीकार की। साढ़े १२ वर्ष का उनका साधना काल बड़ा कष्टप्रद और घोर उपसर्गों से भरा हुआ था। लेकिन महावीर उन कठिन-कठिनतम परिस्थितियों में भी मेरु की तरह अविचल रहे। जब महावीर लगभग साढ़े ४२ वर्ष के हुए तो उनका संकल्प सिद्ध हुआ और उनको परम ज्ञान की प्राप्ति हुई।

उन्होंने अहिंसा को शाश्वत धर्म बताया। भगवान महावीर ने अपने प्रवचनों में अपरिग्रह, अनेकांत, दास प्रथा का उन्मूलन, जातिवाद की अतात्त्विकता, पशु बलि का विरोध, नारी जाति की समानता आदि सिद्धांतों पर बल दिया। उस युग की समस्याओं का उन्होंने समाधान दिया।

शासनश्री मुनिश्री ने महावीर की अभ्यर्थना में गीत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में तेरापंथ महिला मंडल की बहनों ने मंगलाचरण किया। अणुव्रत विद्यालय की छात्राओं ने गीत की प्रस्तुति दी। तेरापंथी सभा के मंत्री चमन दुधोड़िया, कवि गौरी शंकर भावुक, जीवराज सिंह, सूरजमल नाहटा, चैनरूप दायमा, रेखा राम गोदारा, सपना बैद, ज्योति दुधोड़िया तथा ज्ञानशाला के बच्चों ने गीत व वक्तव्य के द्वारा भगवान महावीर की अभ्यर्थना की। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष प्रदीप सुराना ने संयोजन किया। मंत्री विनोद नाहटा ने आभार ज्ञापन किया।

## संस्कार निर्माण अणुव्रत जीवन विज्ञान

### सिकंदराबाद।

श्रद्धा की प्रतिमूर्ति अणुव्रत सेवी निर्मला बैद ने गवर्नमेंट बॉयज हाईस्कूल, सिकंदराबाद में अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान का कार्यक्रम आयोजित किया। कार्यक्रम का प्रारंभ तुलसी अष्टकम् से किया गया। उन्होंने बताया कि आज की शिक्षा पद्धति अधूरी है। बौद्धिक व शारीरिक विकास हो रहा है। भावनात्मक विकास नहीं होने से शिक्षा में समस्याएँ पैदा हो रही हैं। अच्छे डॉक्टर, वकील, इंजीनियर बन रहे हैं। परंतु चरित्र संपन्नता नहीं होने के कारण समस्याएँ बढ़ रही हैं। भावनात्मक विकास के लिए पूज्यप्रवर द्वारा चलाया गया जीवन-विज्ञान बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ है। कैसे जीना, समय का मैनेजमेंट कैसे करना, अन्य अनेकों बातें बताई गईं।

व्यसनमुक्त जीवन, सांप्रदायिक सद्भावना, ईमानदारी तीनों के बारे में उदाहरण द्वारा बताया। प्रेक्षाध्यान के प्रयोग दीर्घश्वास, ज्योतिकेंद्र, महाप्राण ध्वनि के प्रयोग करवाए।

अणुव्रत अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में पूरे वर्ष अणुव्रत कार्यक्रम पूरे देश में चल रहे हैं। अध्यात्म जगत के महासूर्य आचार्यश्री महाश्रमण जी की यात्रा का नाम 'अणुव्रत यात्रा' घोषित किया गया है। गणाधिपति गुरुदेव तुलसी के आंदोलन की ज्यादा से ज्यादा प्रभावना हो तभी सार्थकता है। अणुव्रत गीत के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

प्रिसिपल स्वरूपा, अध्यापक रामोजी, मेडम ज्योति, पद्मा, दीपांजी का पूरा सहयोग रहा। हनुमान जितेंद्र बैद की तरफ से सामान, बुक्स वगैरह दिया गया।

◆ आदमी को परिस्थिति सापेक्ष खुशी में ज्यादा लयलीन नहीं होना चाहिए और परिस्थिति सापेक्ष समस्या में ज्यादा दुःखी भी नहीं बनाना चाहिए।





## मनोनुशासनम्

□ आचार्य तुलसी □



### कायोत्सर्ग की विधि

कायोत्सर्ग बैठी, खड़ी और सोयी-तीनों मुद्राओं में किया जा सकता है। इसकी पहली प्रक्रिया शिथिलीकरण है। यदि आप बैठे-बैठे कायोत्सर्ग करना चाहते हैं तो सुखसन या पद्मासन लगाकर या पालथी बाँधकर बैठ जाइए। दोनों हाथों को या तो घुटनों पर टिकाए या बायीं हथेली पर दायीं हथेली रखकर उन्हें अंक में रखिए। फिर पृष्ठवंश (रीढ़ की हड्डी) और गर्दन को सीधा कीजिए। यह ध्यान रहे कि उनमें न झुकाव हो और न तनाव हो। वे शिथिल भी रहें और सीधे-सरल भी। फिर दीर्घश्वास लीजिए। श्वास को उतना लंबाईए जितना बिना किसी कष्ट के लंबा सकें। इससे शरीर और मन दोनों के शिथिलीकरण में बड़ा सहारा मिलेगा। आठ-दस बार दीर्घ श्वास लेने के बाद वह क्रम सहज हो जाएगा। फिर शिथिलीकरण में मन को लगाइए। स्थिर बैठने से कुछ-कुछ शिथिलीकरण तो अपने आप हो जाता है। फिर विचारधारा द्वारा प्रत्येक अवयव को शिथिल कीजिए। मन को उसी अवयव में टिकाइए, जिसे आप शिथिल कर रहे हैं। अवयवों को शिथिल करने का क्रम यह रखिए—गर्दन, कंधा, छाती, पेट—दायें, बायें, पृष्ठभाग, भुजा, हाथ, हथेली, अंगुली, कटि, टाँग, पैर-अंगुली। फिर मांसपेशियों को शिथिल कीजिए। मन से शरीर के भाग और मांसपेशियों का अवलोकन कीजिए। इस प्रकार अवयवों और मांसपेशियों के शिथिलन के बाद स्थूल शरीर से संबंध-विच्छेद और सूक्ष्म शरीर से दृढ़ संबंध-स्थापन का ध्यान कीजिए।

सूक्ष्म शरीर दो हैं—(१) तैजस, (२) कर्मण।

तैजस शरीर विद्युत् का शरीर है। उसके साथ संबंध स्थापित कर प्रकाश का अनुभव कीजिए। शक्ति और दीप्ति की प्राप्ति का यह प्रबल माध्यम है।

कर्मण शरीर के साथ संबंध स्थापित कर भेद-विज्ञान का अभ्यास कीजिए।

इस भूमिका में ममत्व-विसर्जन हो जाएगा। शरीर मेरा है—यह मानसिक भ्रांति विसर्जित हो जाएगी।

यदि आप खड़ी मुद्रा में कायोत्सर्ग करना चाहते हैं तो सीधे खड़े हो जाइए। दोनों हाथों को घुटनों की ओर लटकाकर उन्हें ढीला छोड़ दीजिए। पैरों को समरेखा में रखिए और दोनों पंजों में चार अंगुल का अंतर रखिए। शेष सारे अंगों को स्थिर रखिए और शिथिल कीजिए। किसी भी अंग में तनाव मत रखिए।

यदि आप सोयी मुद्रा में कायोत्सर्ग करना चाहते हैं तो सीधे लेट जाइए। सिर से लेकर पैर तक के अवयवों को पहले तानिए, फिर क्रमशः उन्हें शिथिल कीजिए। हाथों और पैरों को परस्पर सटाए हुए मत रखिए। श्वास-उच्छ्वास समभाव से किंतु लंबा लीजिए। मन को श्वास-उच्छ्वास में लगाकर एकाग्र या विचारशून्य हो जाइए।

मन को शांत व स्थिर करने के लिए शरीर को शिथिल करना बहुत आवश्यक है। प्रयत्न से चंचलता बढ़ती है। स्थिरता अप्रयत्न से आती है। शरीर उतना शिथिल होना चाहिए जितना किया जा सके। वह प्रतिदिन आधा घंटा शिथिल हो सके तो मन अपने आप शांत होने लगता है। शिथिलीकरण के समय मन पूरा खाली रहे, कोई चिंतन न हो, जप भी न हो। यह न हो सके तो ऊँ, अहम् जैसे किसी शब्द का ऐसा प्रवाह हो कि बीच में कोई दूसरा विकल्प न आए। श्वास की गिनती करने से यह स्थिति सहज ही बन जाती है।

कायोत्सर्ग के प्रारंभ में इन संकल्पों को दोहराइए—

(१) शरीर शिथिल हो रहा है। (२) श्वास शिथिल हो रहा है। (३) स्थूल शरीर का विसर्जन हो रहा है। (४) तैजस शरीर प्रदीप्त हो रहा है। (५) कर्मण शरीर (वासना-शरीर) भिन्न हो रहा है। (६) ममत्व-विसर्जन हो रहा है। (७) मैं आत्मस्थ हो रहा हूँ।

### कायोत्सर्ग का कालमान

कायोत्सर्ग की प्रक्रिया कष्टप्रद नहीं है। उससे शारीरिक विश्रान्ति और मानसिक शांति प्राप्त होती है। इसलिए वह चाहे जितने लंबे समय तक किया जा सकता है। कम से कम पंद्रह-बीच मिनट तो करना ही चाहिए। कायोत्सर्ग में मन को श्वास में लगाया जाता है, इसलिए उसका कालमान श्वास की गिनती से भी किया जा सकता है, जैसे सौ श्वासोच्छ्वास का कायोत्सर्ग, दो सौ, तीन सौ, पाँच सौ, हजार श्वासोच्छ्वास का कायोत्सर्ग आदि-आदि।

### कायोत्सर्ग का फल

कायोत्सर्ग का मुख्य फल है—आत्मा का सान्निध्य प्राप्त करना। उसका गौण फल है—मानसिक संतुलन, बौद्धिक विकास और शारीरिक स्वस्थता। मानसिक स्वस्थता, स्नायु-तनाव व कफ से उत्पन्न रोगों के लिए यह अमूल्य रसायन है।

आचार्य भद्रबाहु ने कायोत्सर्ग के पाँच फल बताए हैं—

(१) दैहिक जड़ता की शुद्धि-श्लेष्म आदि के द्वारा देह में जड़ता आती है। कायोत्सर्ग से श्लेष्म आदि के दोष मिट जाते हैं। अतः उनसे उत्पन्न होने वाली जड़ता भी नष्ट हो जाती है।

- (२) बौद्धिक जड़ता की शुद्धि—कायोत्सर्ग में चित्त एकाग्र होता है। उससे बौद्धिक जड़ता नष्ट हो जाती है।
- (३) सुख-दुःख तितिक्षा—सुख-दुःख सहने की शक्ति प्राप्त होती है।
- (४) शुद्ध भावना का अभ्यास होता है।
- (५) ध्यान की योग्यता प्राप्त होती है।

### बैठकर किए जाने वाले आसन

#### गोदोहिका

विधि—घुटनों को ऊँचा रखकर पंजों के बल पर बैठ जाइए। दोनों हाथों को दोनों ऊरुओं (साथलों) पर टिका दीजिए। यह गाय को दोहने की मुद्रा है, इसलिए इसका नाम गोदोहिका है।

समय—दीर्घकाल।

फल—कामवाहिनी नाड़ियों पर दबाव पड़ने के कारण यह ब्रह्मचर्य में सहायक होता है।

भगवान् महावीर इस आसन में ध्यान किया करते थे।

#### उत्कटुकासन

विधि—दोनों पैरों को भूमि पर टिका दीजिए और दोनों पुतों को भूमि से न छुआते हुए जमीन पर बैठ जाइए।

समय—दीर्घकाल।

फल—(१) ब्रह्मचर्य में सहायक। (२) इसमें बैठे-बैठे पवनमुक्तासन की क्रिया हो जाती है, इसलिए यह वातरोग में भी लाभ पहुँचाता है।

#### समपादपुता

विधि—दोनों पैरों और पुतों को समरेखा में भूमि से सटाकर बैठ जाइए।

समय—दीर्घकाल।

फल—(१) ब्रह्मचर्य में सहायक। (२) वातरोग में लाभकारी।

#### गोनिषदिका

विधि—बाएँ पैर की एड़ी को ऊरु से सटाकर बैठ जाइए और दायें पैर को उससे कुछ नीचे रखकर उसे मोड़ते हुए पीछे की ओर ले जाइए। दूसरी आवृत्ति में दायें पैर की एड़ी को ऊरु से सटाकर बैठ जाइए और बायें पैर को उससे कुछ नीचे रखकर उसे मोड़ते हुए पीछे की ओर ले जाइए। यह गाय के बैठने का आसन है, इसलिए इसे गोनिषदिका कहा जाता है।

समय—दीर्घकाल।

फल—ब्रह्मचर्य में सहायक।

#### हस्तिशुण्डिका

विधि—पुतों के सहारे बैठकर क्रमशः एक-एक पैर को ऊपर उठाकर अधर में रखिए।

समय—एक मिनट से पाँच मिनट तक।

फल—(१) कटिभाग से नीचे के अवयवों में शक्ति का संचार होता है। (२) वीर्य-दोष नष्ट होते हैं। कुछ योगाचार्य इसे खड़ा होकर किया जाने वाला आसन मानते हैं। उसकी प्रक्रिया यह है।

विधि—सीधे खड़े रहिए। सिर को घुटनों की ओर नीचे ले जाइए। दोनों हाथ जोड़कर हाथी की सूंड की भाँति दोनों पैरों के बीच में जितना ले जा सकें, ले जाएँ।

समय—एक से पाँच मिनट तक।

फल—पेट, पीठ, छाती, ग्रीवा और पैरों के विकार दूर होते हैं।

#### पद्मासन

विधि—पहले बायें पैर को दायें ऊरु और जंघा की संधि पर और दायें पैर को बायें ऊरु और जंघा की संधि पर रखिए। फिर दूसरी विधि के अनुसार पहले दायें पैर और फिर बायें पैर उसी पद्धति से रखिए। बायीं हथेली पर दायीं हथेली रखकर उन्हें नाभि के नीचे रखिए। इस स्थिति में बैठने पर पृष्ठ-रज्जु और गर्दन अपने आप सीधे हो जाते हैं। आँखों को मुंदी हुई या अधमुंदी हुई रखिए।

समय—अभ्यास करते-करते इसे तीन घंटे तक ले जाइए। यह उससे भी अधिक समय तक किया जा सकता है किंतु तीन घंटे का अभ्यास कर लेने पर यह सध जाता है।

फल—(१) यह मुख्यतः ध्यानासन है। इससे शारीरिक धातुएँ सम होती हैं, इसलिए यह मन की एकाग्रता में सहायक बनता है। (२) जंघा, ऊरु आदि के स्नायु सशक्त होते हैं। (३) इंद्रिय-विजय में सहायता मिलती है।

(क्रमशः)





## संबोधि

### □ आचार्य महाप्रज्ञ □ बंध-मोक्षवाद

मिथ्या-सम्यग्-ज्ञान-मीमांसा

भगवान् प्राह

(४२) यत् सम्यक् तत् भवेन्मौनं, यन्मौनं सम्यगस्ति तत्।  
मुनिः मौनं समादाय, धुनीयाच्च शरीरकम्।।

जो सम्यक्-यथार्थ है, वह मौन-श्रामण्य है और जो मौन है, वह सम्यक् है। मुनि मौन को स्वीकार कर कर्मशरीर को प्रकंपित करे, शरीर-मुक्त बने।

मुनि का कर्म मौन है। वह आत्मशुद्धिमूलक होने से सम्यक् है। एक कारण है और दूसरा कार्य। कार्य और कारण के अभेद दर्शन से सम्यक् को मौन और मौन को सम्यक् कहा है। मुनि का कर्म इसलिए सम्यक् है कि उसमें राग, द्वेष, कषाय, मोह आदि का उपशम या क्षय होता है।

मौन धर्म की समुपासना का फल है-स्थूल और सूक्ष्म शरीर से मुक्त होना। सूक्ष्म शरीर का जब अंत हो जाता है, तब भवचक्र रुक जाता है। समस्त सत् और असत् इच्छाओं से सर्वथा आत्मा विलग हो जाती है। इच्छाओं का अंत ही जन्म का अंत है।

‘सत्य मौन में घटित होता है’-यह समस्त ऋषियों का अनुभूत स्वर है और यह भी अनुभूत वाणी है कि सत्यवान् व्यक्ति मौन को उपलब्ध हो जाता है। इस दृष्टि से मौन और सत्य दोनों परस्परश्रित हैं। एक-दूसरे के अभिन्न मित्र हैं। सम्यक् का अर्थ है-सत्य। सत्य यानी अस्तित्व की अनुभूति का ज्ञान। आचार्य पूज्यपाद ने लिखा है-‘साधक बाह्य वचन-व्यवसाय का विसर्जन कर अंतरंग में होने वाले वाक्-प्रपंच का भी विसर्जन करे। परमात्म-प्रदीप को प्रकट करने की यह संक्षिप्त योगविधि है।’ वाक्जाल से मुक्त होना साधक के लिए अत्यंत अपेक्षित है। अन्यथा उसका समग्र शक्ति-प्रवाह व्यर्थ अंतर्वाणी और बाह्यवाणी के व्यापार में व्यय हो जाता है। मौन केवल शारीरिक तनाव की मुक्ति के लिए नहीं है, यह उसका क्षुद्रतम उपयोग है। उसकी वास्तविक उपादेयता है-चैतन्य का साक्षात्कार। जहाँ स्पंदन शांत हो जाते हैं, उस क्षण में हम स्वयं के भीतर होते हैं। मौन उसी चैतन्य की अनुभूति के लिए है। उसके अनेक भेद हैं। अंतर्मौन तक पहुँचने की ये प्राथमिक सीढ़ियाँ हैं। यथार्थ मौन वही है जहाँ साधक की अंतर्वाणी मुखरित हो जाती है और बाह्य सर्वथा शांत। मौन के क्षणों में फिर सत्य-अस्तित्व बोलता है, वह नहीं। उसका अपना ‘मैं’ ‘अहं’ मिट जाता है। वह उसी परम सत्य की एक कड़ी बन जाता है। मौन-साधकों के लिए अंतर्मौन का अभ्यास उपादेय है। अन्यथा जहाँ उन्हें पहुँचना है वहाँ पहुँच पाना असंभव है।

अंतर्मौन का अर्थ है-विचार-नियमन तथा विचार-शून्यता। विचारों के निग्रह के लिए आपको विचारों के प्रति जागरूक या साक्षी होना होगा। जैसे-जैसे जागरण बढ़ेगा। विचारों का सिलसिला टूटता चला जाएगा। एक विचार से दूसरे विचार के उत्पन्न होने के मध्य दूरी का अनुभव होगा और इसी से शैल-शून्य: आप शून्य में प्रवेश कर जाएंगे। विचार-नियमन का इससे अधिक सरल और कारगर उपाय नहीं है। यह स्पष्ट है कि विचारों का नियंत्रण दुरूह है, किंतु साधक के आत्म-बल, दृढ़ भावना, श्रद्धा और सतत अभ्यास के सक्षम उसकी दुरूहता स्वयं सरलता में परिणत होती चली जाती है। साधक केवल जो जैसा आता है उसे उसी रूप में शांत-समभाव से देखता रहे, न विचारों को लाने का प्रयास करे और न उन्हें हटाने का। बस, वह तो उनके प्रति जागृत रहे।

(क्रमशः)

## अवबोध

### □ मंत्री मुनि सुमेरमल ‘लाडनू’ □ धर्म बोध

भाव धर्म

प्रश्न २४ : एक भाव कहाँ होता है?

उत्तर : किसी व्यक्ति विशेष में एक भाव नहीं होता। अजीव में एक पारिणामिक भाव होता है। चौदहवाँ गुणस्थान भी एक पारिणामिक भाव है, किंतु चौदहवें गुणस्थानवर्ती व्यक्ति में अन्य भाव भी होते हैं।

प्रश्न २५ : दो भाव कहाँ होते हैं?

उत्तर : प्रथम तीन चारित्र-भाव दो-क्षायोपशमिक, पारिणामिक उपशम श्रेणी का यथाख्यात चारित्र-भाव दो-औपशमिक, पारिणामिक क्षायिक श्रेणी का यथाख्यात चारित्र-भाव दो-क्षायिक, पारिणामिक

प्रश्न २६ : तीन भाव कहाँ होते हैं?

उत्तर : मिथ्यात्वी व क्षयोपशम सम्यक्त्वी में भाव तीन-औदयिक, क्षायोपशमिक, पारिणामिक।

(क्रमशः)

## उपासना

(भाग - एक)

### □ आचार्य महाश्रमण

आचार्य तुलसी

दशार्णभद्र



दशार्णभद्र राजा दशार्णभद्र देश का अधिपति था। यह भगवान् महावीर का परम भक्त था। उसके यह नियम था कि ‘भगवान् महावीर आज अमुक स्थान पर सुखसाता से विराजमान हैं-यह संवाद सुनकर ही भोजन करना।

एक बार भगवान् महावीर ‘दशार्णभद्रपुर’ में पधारे। राजा ने सोचा कि मैं भगवान् के दर्शन करने ऐसे ऐश्वर्य के साथ जाऊँ जैसे ऐश्वर्य से आज तक कोई न गया हो। उसी के अनुरूप साज-सज्जा से राजा दर्शनार्थ गया। अपने वैभव पर मन ही मन इतना रहा था। अवधिज्ञान से सौधर्मन्त्र ने राजा के भावों का परिज्ञान किया तो वह राजा का मान भंग करने चल पड़ा। इंद्र ने अपनी वैक्रियशक्ति से एक बहुत बड़ा हाथी बनाया, जिसके पाँच सौ मुँह थे। प्रत्येक मुँह में आठ-आठ दंतशूल, प्रत्येक दंतशूल पर आठ-आठ विशाल बावड़ियाँ बनाईं। प्रत्येक बावड़ी में लाख पंखुड़ियों वाला कमल का फूल तथा फूल की प्रत्येक पंखुड़ी पर बत्तीस प्रकार के नाटक हो रहे थे। ऐसे हाथी पर सवार होकर इंद्र महाराज प्रभु के दर्शनार्थ आए।

जब इंद्र राजा दशार्णभद्र के सामने से जाने लगा तो राजा ने सोचा-इसके सामने तो मेरी ऋद्धि कुछ भी नहीं है।

अपने से अधिक को देखकर व्यक्ति को अपनी सही स्थिति का ज्ञान हो जाता है। हंत! हंत! मैं व्यर्थ ही इतराया। अब मैं अपने मान की रक्षा कैसे करूँ? सोचा, हो न हो, यह सब देव माया है। उसे परास्त करने और अपना स्वत्व सुरक्षित रखने के लिए प्रभु के पास आकर मुनि बन गया।

यह सामर्थ्य शक्रेन्द्र में कहाँ? उन्होंने अपनी पराजय स्वीकार की। दशार्णभद्र के पैरों में पड़कर इस अद्भुत त्याग की मुक्तकंठ से स्तवना करते हुए क्षमायाचना की। दशार्णभद्र मुनि अपने उत्कट तप के द्वारा केवलज्ञान प्राप्त कर मोक्ष में पधारे।

## श्रमणोपासक आनंद

भगवान् महावीर के प्रमुख श्रावक का नाम ‘आनंद’ था। उसने भगवान् महावीर से श्रावक के बारह व्रत ग्रहण किए। उसकी प्रेरणा से उसकी धर्मपत्नी शिवानंदा ने भी श्राविका व्रत ग्रहण किए।

वह ‘वाणिज्य’ ग्राम के निकट ‘क्रीलाक सन्निवेश’ में रहने वाला ‘पटेल’ जाति का था, पर था समुद्र। उसकी समृद्धि इससे ही आँकी जा सकती है कि उसके पास बारह करोड़ स्वर्ण मुद्राएँ तथा चालीस हजार गाँव थीं।

अपने व्रतों का सानंद और सकुशल पालन करते-करते उसने आमरण अनशन किया। अनशन में उसे भावों की विशुद्धता से विपुल अवधिज्ञान प्राप्त हुआ।

उन्हीं दिनों भगवान् महावीर भी वहाँ पधारे। गौतम स्वामी पारणे के लिए गाँव में आए। जब उन्होंने आनंद श्रावक के अवधिज्ञान की चर्चा सुनी तो उसके यहाँ पधारे। आनंद ने वंदना करके पूछा-‘भगवन्! क्या अनशन में गृहस्थ को अवधिज्ञान उत्पन्न हो सकता है?’

‘हाँ, हो सकता है।’ गौतम गणधर ने बताया।

आनंद ने कहा-‘भगवन्! मुझे भी अवधिज्ञान हुआ है। मैंने पूर्व, पश्चिम और दक्षिण में पाँच सौ योजन लवण समुद्र के अंदर तक, उत्तर में चूल हिमवन्त पर्वत तक तथा ऊपर सौधर्म स्वर्ग और नीचे प्रथम नरक के लौलुच्य नामक नरकवास को जाना-देखा है।’

गौतम सुनकर चौंके और बोले-‘गृहस्थ को इतना विपुल अवधिज्ञान नहीं हो सकता है। तुम्हारा यह मिथ्याभाषण हुआ है। इसलिए इसकी आलोचना करो।’

आनंद ने विनम्र स्वर में पूछा-‘प्रायश्चित्त सत्य का होता है या मिथ्या का?’

‘असत्य का।’

‘तब तो भगवन् आप ही ऐसा करिये।’

आनंद की दृढ़तापूर्वक बात सुनकर गौतम महावीर के पास आए। सारी बात कही। महावीर ने कहा-‘हाँ, उसे उतना ही अवधिज्ञान हुआ है। तुम्हारे द्वारा ही असत्य भाषण हुआ है। अतः आनंद से क्षमा-याचना करो।’

गौतम तुरंत आनंद के पास आए और उसे सत्य बताते हुए कहा-‘मैं वृथा विवाद के लिए तुमसे क्षमा-याचना चाहता हूँ।’

आनंद से सविनय क्षमा-याचना करके गौतम ने अपनी महानता का परिचय दिया। यों आनंद श्रावक ने बीस वर्ष तक श्रावक-व्रतों का पालन किया। अंत में एक महीने का समाधिपूर्वक अनशन करके प्रथम स्वर्ग में पैदा हुआ। वहाँ से महाविदेह क्षेत्र में जाकर मोक्ष में जाएगा।

(क्रमशः)







## साध्वी रमाकुमारी जी के प्रति आध्यात्मिक उद्गार

### जय-जय रमाकंवर जी

#### ● शासनश्री साध्वी प्रशमरति, साध्वी अमितयशा, साध्वी शांतिप्रभा, साध्वी कारुण्यप्रभा, साध्वी चारुलता ●

सतर वर्षा तक संयम पाल्यो है रम्माकंवरजी।  
जय-जय रम्माकंवरजी।।

सावण कृष्णा आठ मन थे नोहर गाँव म जन्म्या,  
पिता जुहार माता हुलास रे मनडे म थे रम्या।  
चोरड़िया कुल गौरवशाली जन्मया रम्माकंवरजी।।

चार-चार भगिनी दीक्षा ली तुलसी प्रभु चरणां में,  
नैया पार करी रम्माजी महाश्रमण चरणा में।  
'शुभ' सेवा रो शुभमय योग मिल्यो है रम्माकंवरजी।।

तुलसी प्रभु र चरणामं संयममय जीवन पायो,  
त्रयी ज्येष्ठा भगिन्या रो स्नेह मिल्यो पग सुखदायो।  
हरियल भू पर अंतिम साँस लियो है रमाकंवरजी।।

महातपस्वी महाश्रमण सा कुशल सारथी पाया,  
नंदनवन सा भैक्षवशासन पाकर मन हरसाया।  
ज्योति चरण चरणा म अंतिम साँस ली रम्माकंवरजी।।

प्रेम भाव तीनों भगिन्यां रो मे तो आख्यानिरख्यो,  
दो महिना सेवा रो अवसर पाकर मनडो हरस्यो।  
प्रमोद भावना निजरां निरखी जय-जय रम्माकंवरजी।।

लय : संयममय जीवन हो----

### अर्हम

#### ● साध्वी यशोधरा ●

धन्य-धन्य शासनश्री तूने, जीवन गजब संवारा,  
खूब उजाली संयम चादर, शत-शत नमन हमारा।।  
जय-जय-जय जिनवर शासन, धर्मसंघ है आश्वासन।  
(वाह-वाह रामकुमारी तूने, जीवन गजब संवारा---)

चार-चार सुखशय्याओं में, रमण किया है जीभर,  
निर्मल गतिशील सदा उपयोगी, शासनश्री जैसे निर्झर।  
सिंह वृत्ति से बचपन में ही, साधुव्रत स्वीकारा।।  
वाह-वाह रमाकुमारी तूने---।।

महाश्रमण का मंगल साया, करुणारस बरसाए,  
गुरु करुणा से पंगुनर भी, प्रगति शिखर चढ़ जाए।  
आर्यत्रयी की परमकृपा से, पाया दिव्य उजारा।।  
वाह-वाह- रमाकुमारी तूने---।।

चार-चार बहनों ने दीक्षा, ले गणशान बढ़ाई,  
शुभप्रभा जी ने शुभ अवसर, पाया है वरदाई।  
गुरुदृष्टि ही सुख की सृष्टि, सूत्र मिला मनहारा।।  
वाह-वाह रमाकुमारी तूने---।।

सतियाँ सारी सेवाभावी, सेवा खूब बजाई,  
लंबे अर्से से स्थिरवासी, गुरु रिझवारी पाई।  
'यशोधरा' हिसार धरा का, चमका भाग्य सितारा।।  
वाह-वाह रमाकुमारी तूने---।।

लय : माँय-निमाँय मुंडेर पे----

### अर्हम

#### ● डॉ० साध्वी शुभप्रभा ●

ॐ भिक्षु की जय हो, श्रीतुलसी की जय हो,  
महाप्रज्ञ की जय हो, महाश्रमण की जय हो।  
साँस-साँस में रमा हुआ था गुरुजी नाम निलय हो।।

शिशु सम सहज सरल मनभावन साध्वी रमाकुमारी,  
सम, शम, श्रम से सींची जिसने जीवन की हर क्यारी।  
तन, मन, वचन, कर्म से होता, सुकृत क्रय-विक्रय हो।।

पाँव-पाँव चलते सूरज की बनी किरण सुखदाई,  
श्रद्धा, सेवा और समर्पण मिला सूत्र वरदायी।  
गुरु दृष्टि ही सुख की सृष्टि, सबका आत्मालय हो।।

मेरा तेरा तेरा मेरा सुख शांति की कुंजी,  
खुले हाथ से बाँटो सबको यही है असली पूँजी।  
आगे बढ़ो, चढ़ो शिखरों तक, देती सीख सुनय हो।।

भाग्योदय से पाया हमने महावीर का शासन,  
आर्य भिक्षु से महाश्रमण तक तेजस्वी अनुशासन।  
क्या पाया है क्या खोया, इस चिंतन में तन्मय हो।।

मौन साधिका शासनश्री की सदा रही परछाई,  
उपशांत भाव की कर आराधना कर ली खूब कमाई।  
छोड़ अचानक चली गई वे चेतन ज्योतिर्मय हो।।

शासनश्री साध्वी यशोधरा संयम प्रेम शुभंकर,  
जागरूक श्रावक समाज का योग मिला श्रेयस्कर।  
हिसार उपसेवा केंद्र निराला, सर्वे मंगलमय हो।।

लय : संयममय जीवन हो----

### बन गई शिवपुर की राही

#### ● साध्वी ऋतुयशा ●

बन गई शिवपुर की राही।  
साध्वी रमाकुमारी ने ली, गण से आज विदाई।।

भाग्योदय से नंदनवन-सा, शासन हमने पाया,  
कल्पतरु-सम नेमानंदन, का मंगलमय साया।  
मृत्यु महोत्सव बनी तुम्हारी, बाजी यश शहनाई।।  
बन गई शिवपुर की राही---।।

ऋजुता-मृदुता, सहज, सरलता, सबके मन को भाती,  
मधुरभाषिणी स्वरज्ञज्ञता, रचना नित नई रचाती।  
शांत भाव से सही वेदना, श्रमशीला स्वाध्यायी।।  
बन गई शिवपुर की राही---।।

कर्मों को ललकारा तूने, हृद हिम्मत दिखलाई,  
कुल पर स्वर्णिम कलश चढ़ाया, गण सुषमा महकाई।  
आज सभी को छोड़ चली, यादों में सदा समाई।।  
बन ई शिवपुर की राही---।।

चारों बहनों में सबसे छोटी, साध्वी रमाकुमारी,  
शासनश्री से हुई सुशोभित, खिली भाग्य फुलवारी।  
बिना बतलाए पता नहीं क्यों? मौत अचानक आई।।  
बन गई शिवपुर की राही---।।

लय : जहाँ डाल-डाल पर----

### अर्हम

#### ● शासन गौरव साध्वी राजीमती ●

शासनश्री साध्वी रमाकंवर जी तेरापंथ धर्मसंघ की एक अच्छी साध्वी थी। स्वाध्यायप्रिया, सेवाभावी, योग-प्रयोगों का अभ्यास करने वाली, साहित्य लेखिका, वक्तव्य कला आदि अनेक विशेषताओं से संयुक्त थी। चिकित्सा संबंधी उनको अच्छी जानकारी थी।

दोनों बहनों की सेवा करती-करती पहले चली गई। यह नियति थी, परंतु उन्होंने पुरुषार्थ का जीवन जीया। शासनश्री साध्वी राजकुमारी जी एवं साध्वी जयश्री जी दोनों समार्थी में रहे। अपनी साधना का बल बढ़ाएँ।

साध्वी शुभप्रभा जी को सेवा का विशेष अवसर मिला। आचार्यश्री महाश्रमण जी के निर्देशानुसार इस सेवा केंद्र की अपनी उपयोगिता है। हिसार के भाई-बहन सेवा तथा चिकित्सा के क्षेत्र में अनुकरणीय है। जिंदल की सेवाओं से कितने साधु-साध्वी लाभान्वित हो रहे हैं।

### एक शाम भिक्षु के नाम भक्ति संध्या

#### वाशी।

आचार्य भिक्षु की स्तुति करने के लिए भिक्षु भक्ति मंडल, वाशी द्वारा आयोजित 'एक शाम भिक्षु के नाम' कार्यक्रम का आयोजन साध्वी पंकजश्री जी के सान्निध्य में हुआ। कार्यक्रम में मुख्य प्रस्तुति संगायक कमल सेठिया द्वारा दी गई। मंगलाचरण भिक्षु भक्ति महिला मंडल द्वारा किया गया।

स्वागत सभा अध्यक्ष विनोद बाफना, तेयुप अध्यक्ष महावीर सोनी, महिला मंडल संयोजिका इंदु बड़ाला, भिक्षु फाउंडेशन के कोषाध्यक्ष ललित बोहरा ने किया। फाउंडेशन के महामंत्री बाबूलाल बाफना ने नव निर्मित समाज के भवन की विस्तृत जानकारी दी।

कार्यक्रम में आचार्य महाश्रमण चातुर्मास व्यवस्था समिति महामंत्री महेश बाफना, कोषाध्यक्ष गौतम कोठारी, तेरापंथ सभा, मुंबई कार्याध्यक्ष नवरत्न गन्ना, तुलसी महाप्रज्ञ फाउंडेशन अध्यक्ष विनोद बोहरा, तेरापंथी महासभा कार्यकारिणी सदस्य तनसुख चोरड़िया, अपुविभा उपाध्यक्ष विनोद कोठारी, बीसी भालावत सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं गणमान्यजन उपस्थित थे।

कोपरखैरना, नेरुल, सीबीडी, एरोली, ठाणा, उल्हासनगर, मानखुर्द क्षेत्र से अनेक जन पधारे। भिक्षु भक्ति मंडल के संयोजक प्रवीण चोरड़िया ने तेयुप द्वारा कार्यक्रमों की जानकारी दी।

### आध्यात्मिक मिलन समारोह

#### सरदारपुरा।

साध्वी प्रांजलप्रभा जी ने तेरापंथ भवन, अमरनगर से ६ दिवसीय प्रवास के बाद मंगल विहार किया। साध्वीश्री जी ने ६ दिवस के प्रवास के दौरान श्रावक समाज को तत्त्वज्ञान, आत्मा, कर्मवाद आदि की जानकारी, जप व ध्यान के प्रयोग करवाए।

श्रावक समाज इस प्रवास के दौरान मिले आध्यात्मिक लाभ के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए साध्वीश्री जी के विहार में सहभागी बना।

विहार करते हुए साध्वीश्री शुभम फार्म पधारे। वहाँ विराजित साध्वी प्रमोदश्री जी आदि साध्वियों से सौहार्दपूर्ण मिलन हुआ। आध्यात्मिक मिलन के इस दृश्य को देख उपस्थित श्रावक समाज का रोम-रोम आनंदित हो गया। इस अवसर पर उपस्थित साध्वीवृंद द्वारा स्वागत किया गया।

इस अवसर पर तेरापंथी सभा, सरदारपुरा, तेयुप, महिला मंडल, कन्या मंडल के सदस्यों की उपस्थिति रही।



## इंद्रियों का संयमित उपयोग करें : आचार्यश्री महाश्रमण



कनेरा, अहमदाबाद ३१ मार्च, २०२३

धर्मोपदेशक आचार्यश्री महाश्रमण जी प्रातः लगभग १२ किलोमीटर का विहार कर कनेरा ग्राम में स्थित दलिया इंस्टीट्यूट ऑफ डिप्लोमा स्टडीज परिसर में प्रवास हेतु पधारे।

परम पावन ने पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि मानव शरीर में पाँच इंद्रियाँ हैं और भी कई प्राणियों के शरीर में पाँचों इंद्रियाँ होती हैं। ऐसे भी बहुत से प्राणी हैं, जिनके पाँचों इंद्रियाँ नहीं होती। यह

इंद्रिय जगत विकास का प्रतीक है कि किस प्राणी का कितना विकास है।

सबसे कम एकेन्द्रिय प्राणी का होता है, फिर द्विइंद्रिय, त्रिइंद्रिय, चतुरिंद्रिय और पंचेन्द्रिय में क्रमशः विकास बढ़ता जाता है। ये इंद्रियाँ ज्ञान का साधन बनती हैं। इंद्रियों के उपयोग में संयम की चेतना भी रहनी चाहिए। संयम होता है, तो आत्मा की दृष्टि से भी अच्छा है और व्यावहारिक दृष्टि से भी काफी अच्छा रह सकता है। यह दृष्टांत दो कछुओं के माध्यम से समझाया।

अणुव्रत भी संयम की बात बताने वाला कार्यक्रम है। संयम ही जीवन है। मोह कर्म के प्रभाव से आदमी असंयम में चला जाता है। यह भी एक प्रसंग द्वारा समझाया कि असंयम कितना नुकसान कर सकता है। संयम रखें तो इंद्रियाँ उपयोगी सिद्ध हो सकती हैं।

असंयमित इंद्रियाँ दुष्ट घोड़े के समान हैं, जो कुपथ में ले जाने वाला होता है। कुलीन घोड़ा तो पार लगा देता है। विवेक का नाश करने के लिए असंयमित इंद्रियाँ काले नाग के समान हैं, जो पुण्यरूपी वृक्ष को काटने के लिए कुठार के समान है। इंद्रियों को संयमित करने के लिए प्रेक्षाध्यान में सर्वेन्द्रिय संयम का प्रयोग भी कराया जाता है। इंद्रियों का संयम कल्याणकारी बात हो सकती है।

अमराव बैंगानी व दुगड़ परिवार दिल्ली से संबल लेने हेतु आए हैं। अमराव शांत स्वभाव के लगते थे एवं सायर बाई अभातेमम से जुड़ी हुई हैं।

सायर बाई एवं परिवार वालों ने अपनी भावना श्रीचरणों में अभिव्यक्त की। दलिया इंस्टीट्यूट से प्रिंसिपल डॉक्टर के०जी० मेहता ने कहा कि अणुव्रत यात्रा मिशन का मैं अपने इंस्टीट्यूट में स्वागत करता हूँ, इससे समाज सुधार हो सकता है। आपके पधारने से धरती पवित्र हो गई। हमारे विद्यार्थी आपसे प्रेरणा ग्रहण करेंगे। व्यवस्था समिति द्वारा प्रिंसिपल का सम्मान किया गया।

पूज्यप्रवर ने इंस्टीट्यूट के विद्यार्थियों को सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति को समझाकर संकल्प स्वीकार करवाए।

## सम्यक् आचरण के लिए सम्यक् ज्ञान जरूरी : आचार्यश्री महाश्रमण

डभाण खेड़ा, १ अप्रैल, २०२३

व्यावसायिक संबंधी वर्ष का प्रथम दिन।

नैतिकता के पुरोधा आचार्यश्री महाश्रमण जी विहार कर प्रातः खेड़ा ग्राम के एच०डी० पारेख हिंदी स्कूल परिसर में प्रवास हेतु पधारे। मंगल पाथेय प्रदान करते हुए शांतिदूत ने फरमाया कि हमारे जीवन में ज्ञान का बहुत महत्त्व है। अज्ञान अहितकर हो सकता है। अज्ञान कष्ट है। गुस्सा-अहंकार आदि पाप है, पर उनसे ज्यादा खराब अज्ञान है।

अज्ञान से आवृत्त चेतना वाला व्यक्ति मेरा हित किसमें, अहित किसमें, इसका भी विवेक नहीं कर पाता है। ज्ञान

का फल-सार है—आचार। जो जाना वो आचरण में कैसे काम आए। हेय-उपादेय ये विवेक है। ज्ञान सम्यक् होगा तो आचरण भी सम्यक् हो सकेगा। हमारे जीवन में सम्यक् ज्ञान का विकास हो, यह एक प्रसंग द्वारा समझाया कि खुद का ज्ञान अच्छा होना चाहिए।

ज्ञान प्रकाश करने वाला होता है। अध्यात्म विद्या का भी ज्ञान हो, जिसे पाकर आदमी राग से विराग की ओर आगे बढ़े। श्रेयों-कल्याणों में अनुरक्त हो जाए। मैत्री से भावित बन जाएँ। वो ज्ञान अध्यात्म का ज्ञान है। इससे तत्त्व का बोध प्राप्त हो सकता है।

दुनिया में अनेक विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय हैं, जहाँ ज्ञान

का आदान-प्रदान होता है। अध्यात्म विद्या में आत्मवाद, कर्मवाद, स्वर्ग-नरक आदि बहुत-सी बातें हैं। कितने धर्म-ग्रंथ दुनिया में हैं, अनेक विषय हो सकते हैं। शास्त्रों का सार भी यही है कि हमारा जीवन अच्छा बने। अहिंसा, मैत्री, सच्चाई का विकास हो। अणुव्रत भी यही सिखलाता है।

धर्म ऐसा तत्त्व है, जिसके द्वारा उद्धार हो सकता है। संन्यासी तो हर कोई न बन सके, परंतु सद्-गृहस्थ सज्जन आदमी बने। अणुव्रत के छोटे-छोटे नियम जीवन में आने से आदमी अच्छा बन सकता है। आदमी के जीवन में धर्म-आचार आ जाए। ज्ञान और आचार दोनों साथ में रहे, यह एक अंधे

और पंगु के प्रसंग द्वारा समझाया कि ज्ञान और आचार एक-दूसरे के पूरक बन जाएँ।

यह संसार दुखों और संताप की आग है, इससे बचने के लिए ज्ञान और आचार हो तो सर्वदुःख मुक्ति-मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है। विद्यालयों में विद्यार्थियों में अच्छे संस्कार आ जाएँ तो अच्छा जीवन जी सकते हैं, विकास की बात हो सकती है। ज्ञान और आचार दोनों सम्यग् रूप से हमारे में पुष्ट रहें।

पूज्यप्रवर का स्वामी नारायण के दो संतों से मिलना हुआ है। खेड़ा में तेरापंथी परिवार भी हैं, सबमें अच्छी भावना रहे। आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का दिल्ली में स्वामी नारायण परिसर में कार्यक्रम भी हुआ था।

पूज्यप्रवर ने ज्ञानार्थियों को आशीर्वचन फरमाया।

स्वामी नारायण संप्रदाय से स्वामी निर्माणप्रिय जी ने अपनी भावना को अभिव्यक्त करते हुए कहा कि संत मिलन से खुशी प्राप्त होती है। व्यवस्था समिति द्वारा दोनों संतों का सम्मान किया गया। स्थानीय सभाध्यक्ष जयेश चोपड़ा, तेरापंथ महिला मंडल, तेयुप अध्यक्ष जितेंद्र चोपड़ा, ज्ञानशाला प्रस्तुति-समाज सेवक कल्पेश वाघेला ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। स्कूल परिवार का सम्मान किया गया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

### बेस्ट टीपीएफ यूनिट का अवार्ड

औरंगाबाद।

टीपीएफ, छत्रपति संभाजी नगर, औरंगाबाद को नेशनल लेवल पर बेस्ट यूनिट का अवार्ड प्राप्त हुआ। यह अवार्ड नेशनल कॉन्क्लेव, अहमदाबाद में दिया गया। टीपीएफ द्वारा अनेक सामाजिक एवं आध्यात्मिक गतिविधियाँ चलाई जा रही हैं। टीपीएफ द्वारा साइक्लॉथोन, कैरियर काउंसलिंग, सेमिनार आदि भी समय-समय पर आयोजित किए जाते हैं।

टीपीएफ के वेस्ट जोन के ज्वाइंट असेक्रेटरी अंकुर लुणिया ने जानकारी दी। टीपीएफ के अध्यक्ष पूजा बागरेचा ने प्रसन्नता व्यक्त की। मंत्री नेहा लुनिया ने टीपीएफ फ्यूचर में नए मेंबर को एड करना लक्ष्य निर्धारित किया। तेयुप के अध्यक्ष विवेक बागरेचा ने भी टीपीएफ को बधाई देते हुए कहा कि तेयुप सदैव ही टीपीएफ के हर कार्य में साथ देगा।

♦ आदमी को अहिंसा, संयम और तप में पुरुषार्थ करना चाहिए। इन तीनों में सम्यक् पुरुषार्थ करने वाला आदमी मोक्ष की दिशा में गतिमान हो सकता है।

— आचार्यश्री महाश्रमण

### सेवा कार्य

पूर्वांचल-कोलकाता।

तेरापंथ किशोर मंडल, पूर्वांचल-कोलकाता ने तेयुप के निर्देशन में होली के अवसर पर सुभाष उद्यान, स्वस्तिक नगर पानी हट्टी जाकर बच्चों को सत्तु, दलिया, गुलाल व स्टेनरी आदि वितरण किया। लगभग ५० बच्चों को यह मिक्स पैकेट की किट दी गई।

सर्वप्रथम नमस्कार महामंत्र का जाप किया गया। संस्था के प्रभारी ने तेरापंथ किशोर मंडल व तेयुप के प्रति आभार व्यक्त किया।

कार्यक्रम में किशोर मंडल के प्रभारी व परिषद के सहमंत्री-प्रथम यश दुगड़, कार्यकारिणी सदस्य रोहित बोथरा तथा किशोर मंडल से अर्पित मालू सहित अनेक सदस्यों की सहभागिता रही।



## सदुपयोग कर समय को सार्थक बनाएँ : आचार्यश्री महाश्रमण

कांकरिया-मणिनगर, अहमदाबाद।  
२८ मार्च, २०२३

अणुव्रत संयम सप्ताह के अवसर पर अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि काल छः द्रव्यों में एक द्रव्य है। छः द्रव्यों में पाँच तो अस्तिकाय हैं, पर काल के पीछे अस्तिकाय नहीं लगा है। यानी प्रदेशों का समूह नहीं है। काल बीतने के बाद समाप्त हो जाता है।

समय का आदमी किस तरह उपयोग करता है, यह महत्त्वपूर्ण है। काल को आगे से पकड़ें। आगामी काल का हम कैसे उपयोग करें, यह ध्यातव्य विषय बन सकता है। २४ घंटों में से २-२ मिनट निकालें तो ४८ मिनट की सामायिक हो सकती है। नादान आदमी समय का



संपादक पवन अग्रवाल ने इसके बारे में जानकारी दी। इससे पहले २०१४ में गुरुदेव तुलसी एवं २०२० में आचार्यश्री महाश्रमण के जीवन पर विशेषांक प्रकाशित किया गया था। पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया।

अभातेयुप के महामंत्री पवन मांडोट ने बताया कि अहमदाबाद में छात्राओं के लिए एक हॉस्टल बनाया जा रहा है। उसके प्रारूप का लोकार्पण किया गया। इसे शेषमल दक की स्मृति में दक परिवार द्वारा बनाया जा रहा है।

अणुव्रत विश्व भारती के राष्ट्रीय अध्यक्ष अविनाश नाहर ने अणुव्रत वाहिनी का लोकार्पण पूज्यप्रवर की सन्निधि में किया। अणुविभा द्वारा वाहिनी के अनुदानदाताओं का सम्मान किया गया।



दुरुपयोग कर लेता है। हर दिन, हर सप्ताह, हर माह और हर वर्ष का महत्त्व होता है। समय का अपने ढंग से महत्त्व होता है।

आचार्यश्री तुलसी छोटी उम्र में साधु बनकर आचार्य बन गए। उन्होंने अणुव्रत जैसे आंदोलन को चलाया। अणुव्रत हर वर्ग के लिए उपयोगी है। हमारी जीवन शैली अणुव्रत आधारित हो। अणुव्रत अमृत महोत्सव का वर्ष चल रहा है। अणुव्रत के कार्यों में और अधिक स्फूर्णालाने का अवसर है। आर्थिक शुचिता भी रहे। साथ ही गृहस्थों का जीवन अच्छा

रहे। सेवा के अनेक क्षेत्र हैं, पर अणुव्रती बनें। अच्छे इंसान बनें। अणुव्रत आंदोलन इंसानियत की बात करने वाला आंदोलन है। धर्म आदमी का कोई भी हो, उसका आचरण अच्छा होना चाहिए। अणुव्रत की आत्मा संयम है। अपनी दिनचर्या में साधना के रूप में जप, ध्यान, स्वाध्याय को शामिल करें। गृहस्थ होते हुए भी संयम रखें। व्यवसाय-व्यापार में पवित्रता रहे।

आगम के सूत्र हमें काल के प्रति जागरूक रहने का संदेश देते हैं। हमारा

समय प्रमाद में न बीते। अच्छे संकल्प वाले व्यक्ति जीवन में अच्छा कार्य कर सकते हैं। अणुव्रत का कार्य अणुव्रत विश्व भारती कर रही है। अणुव्रत का अच्छा प्रचार-प्रसार हो। लोगों में अणुव्रत के प्रति आकर्षण की भावना जाग्रत हो। समय का अच्छा उपयोग करते हुए अणुव्रत के कार्यों को आगे बढ़ाते रहें।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने कहा कि आत्मा को चमकाने के लिए अपनी आत्मा को रोज माँजना होगा। दो प्रकार की आत्मा होती है—बद्ध आत्मा और मुक्त आत्मा। हमें आत्मा से परमात्मा बनना है। सदगुरु हमें आत्मा से परमात्मा बना सकते हैं। आत्म-शुद्धि के लिए हमें स्वाध्याय, ध्यान और जप करना होगा। छः जीव निकाय के त्राता बनें। पापकारी प्रवृत्ति से बचें। अपने चिंतन को सकारात्मक बनाएँ।

साध्वी आत्मप्रभा जी ने बताया कि संत महात्मा चलते-फिरते तीर्थ होते हैं। गुजरात भाजपा के कोषाध्यक्ष धर्मेन्द्र भाई शाह, मणिनगर के विधायक अमूल भाई भट्ट, अशोक सेठिया ने भी अपनी भावनाएँ अभिव्यक्त की। ज्ञानशाला ज्ञानार्थियों की



प्रस्तुति के साथ ही कन्या मंडल की भी प्रस्तुति हुई। विशाखा दफ्तरी, अनीता कोठारी, तनीशा बरड़िया, हितांशी सामसुखा, उपासक हनुमानमल दुगड़, कीर्ति सामसुखा ने भी गीत-कविता से पूज्यप्रवर की अभ्यर्थना की। महिला मंडल, कन्या मंडल की भी गीत की प्रस्तुति हुई, साथ ही दोनों ने संकल्प स्वीकार किए।

हिंदी साहित्य परिषद् द्वारा पूज्यप्रवर के विषय में अध्यात्म वंदना विशेषांक पूज्यप्रवर को उपहृत किया गया। पुस्तक का नाम है—'नूतन भाषा सेतु'। इसके

प्रवचन से पूर्व आचार्यप्रवर असक्षम श्रावक-श्राविकाओं को दर्शन प्रदान कराने स्वयं पधारें। कई सोसाइटियों एवं घरों में पधारकर पूज्यप्रवर ने श्रावकों को धन्य-धन्य कर दिया। मुख्य मुनिप्रवर ने भी कल और आज सैकड़ों परिवारों की सार-संभाल की। कांकरिया-मणिनगर के श्रावक-श्राविकाएँ पूज्यप्रवर के पदार्पण से धन्य-धन्य हो गए।

ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने 'कर्म समो नहीं कोई' गीतिका का संगान किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

### आचार्यश्री महाश्रमण : चित्रमय झलकियाँ

